रेल सुरभि

अंक - 41

मुख्यालय राजभाषा द्वारा की गई गतिविधियां

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा दिनांक 24 से 28 फरवरी 2025 तक आयोजित पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए डॉ. सुशील कुमार शर्मा, राजभाषा अधिकारी, एम. आर. वी. सी., चर्च गेट।

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा दिनांक 24 से 28 फरवरी 2025 तक आयोजित पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री चंद्र किशोर प्रसाद, प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, मध्य रेल।

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा आयोजित पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला के समापन अवसर पर श्री चंद्र किशोर प्रसाद, प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, मध्य रेल के कर-कमलों से कार्यशाला में सम्मिलित सभी कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

"रेल सुरभि"

अंक-41

जनवरी-मार्च 2025

-: संरक्षक :-

धर्म वीर मीना

महाप्रबंधक

-:मार्गदर्शक:-

चंद्र किशोर प्रसाद

प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

-: संपादक :-

डॉ. विभावरी गोरे

उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल

-: उप संपादक :-

दीपा मंदयान

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

-: सहयोग :-

राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक

डॉ. वीरेंद्रसिंह राव, कनिष्ठ अनुवादक

-: संपर्क का पता :-

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग

नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट

फोन: 54753 / 54752/ 54754 (रेलवे)

022-22697123 (एमटीएनएल)

ई : मेल-dgmol12@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए ।

रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

-: अनुक्रमणिका :-

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	प्यार एक अनंत मीठा अहसास	कविता	विजया गोस्वामी	05
2	अपने-अपने हिस्से का समंदर	कविता	डॉ. प्रवीण चोपड़ा	07
3	मेरा देश	कविता	सुधा मिश्रा द्विवेदी	09
4	ईपीडी शंटिंग में संशोधन	तकनीकी लेख	सुरज पाटिल	11
5	अरुणिमा	कविता	मंगेशरत्न सिंह	13
6	दर्पण, धूल और रिश्ते	कविता	अनिल कुमार तिवारी	15
7	वृक्षारोपण	कविता	प्रमोद सोनी	16
8	राग-विराग	कविता	प्रमोद कुमार	16
9	मैं खाकी हूं	कविता	सिद्धार्थ कुमार गौकरन	17
10	पति परमेश्वर	कविता	त्रिपुरारी कुमार	18
11	हिन्दी तथा मराठी के तत्सम शब्द और तद्भव शब्द	लेख	विमी घनेलू	20
12	भारतीय रेल के बारे में प्रकाशित रोचक पुस्तकें	लेख	विमलेश चंद्र	23
13	घर जमाई	कहानी	आर.एस. माथुर "राज"	26
14	वैजयंती माला : नृत्य और अभिनय का अद्भुत संगम	लेख	डॉ. सरस्वती अय्यर	27
15	अदम गोंडवी के साहित्य में: रानीतिक चेतना	लेख	कुसुम विश्वकर्मा	29
16	मै मोटी हूं... ना !	लेख	विकास कुमार बघेल	33
		मराठी खंड		
17	तरी राग यायला नको!	कविता	अभिजीत बाबुराव रोहेकर	39
18	माथेरानची राणी	कविता	संघपाल वाठोरे	41

धर्म वीर मीना
महाप्रबंधक
Dharam Veer Meena
General Manager

सत्यमेव जयते

मध्य रेल,
छ. शि. म. ट. मुंबई – 400 001

Cenrral Railway,
CSMT, Mumbai – 400 001

संदेश

मध्य रेल मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित राजभाषा गृह-पत्रिका **रेल सुरभि** के इस अंक में विभिन्न साहित्यिक विधाओं को समायोजित कर नवीन कलेवर के साथ ई-प्रारूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में देशभर के विभिन्न क्षेत्रों के रचनाकरों से प्राप्त प्रमुख चयनित रचनाओं को स्थान दिया गया है। रेल सुरभि पत्रिका के अब तक प्रकाशित सभी अंकों के ई-संस्करण मध्य रेल की वेबसाइट पर अपलोड किए गए हैं इससे यह पत्रिका सभी पाठकों तक पहुंच रही है और पाठकवर्ग इसे आसानी से पढ़ रहे हैं।

राजभाषा नियमानुसार केंद्र सरकार के कामकाज में राजभाषा विषयक सुगमता को ध्यान में रखते हुए देश के सभी राज्यों को क्षेत्रवार तीन भागों में विभाजित किया गया है। मध्य रेल का अधिकांश भाग महाराष्ट्र में है जो कि राजभाषा नियमानुसार 'ख' क्षेत्र में आता है। इसी कारण से महाराष्ट्र राज्य की राजभाषा मराठी को भी इस पत्रिका में स्थान दिया गया है।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं रेलवे बोर्ड के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा विषयक अनेक प्रोत्साहन योजनाएं चलाई जाती है। मध्य रेल का राजभाषा विभाग सभी प्रकार की प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने एवं उनके कार्यान्वयन के लिए सदा तत्पर रहता है। मध्य रेल के राजभाषा विभाग द्वारा रेल सुरभि का नियमित प्रकाशन किए जाने से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को और भी प्रगति मिल रही है। रेल सुरभि पत्रिका के इस अंक में प्रतिभाशाली रचनाकारों विशेष रूप से रेल कर्मियों और उनके परिजनों की रचनाओं को शामिल किया गया है। आप भी इसी तरह अपनी प्रतिभा को निखारने के प्रयास करें एवं इस पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं भेजकर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनकर अपना सहयोग प्रदान करें।

इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

(धर्म वीर मीना)
महाप्रबंधक

मध्य रेल
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी का कार्यालय
छत्रपती शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई ,
पिन -400001 फोन नं - 22620778
ईमेल-cso@cr.railnet.gov.in

CENTRAL RAILWAY
Principal Chief Safety Officer's Office
Chhatrapati Shivaji Maharaj Terminus
Mumbai 400001 Phone No : 22620778
email- cso@cr.railnet.gov.in

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

मध्य रेल पर मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका रेल सुरभि में प्रकाशित यह मेरा पहला संदेश है। मध्य रेल मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा निरंतर और नियमित रेल सुरभि प्रकाशित की जाती है जो अवश्य ही सराहनीय है।

राजभाषा विभाग द्वारा रेल सुरभि ई-पत्रिका के नियमित प्रकाशन के साथ-साथ राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा विषयक अन्य कई क्रियाकलाप किए जाते हैं जिनमें समय-समय पर कार्यशालाएं आयोजित करना, सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंतियां मनाना, राजभाषा विषयक विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करना, हिंदी पखवाड़े का आयोजन करना आदि प्रमुख है।

रेल सुरभि ई-पत्रिका में विभिन्न रचनाकारों से प्राप्त हिंदी साहित्य की विभिन्न विधामयी रचनाओं को समेकित कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत अंक में रेल सुरभि के पाठकों में गाड़ी संचालन एवं अप्रिय घटनाओं से बचने संबंधित जागृति बढ़ाने के उद्देश्य से रेल संरक्षा से संबंधित कुछ दोहों/सुविचारों को भी स्थान दिया गया है। पाठकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इन संरक्षा सुविचारों को भी आप अवश्य पढ़ें एवं इस पर उचित अमल करें।

रेल सुरभि पत्रिका का यह अंक हिंदी भाषा के प्रति लेखकों एवं पाठकों की रूचि में अवश्य ही वृद्धि करेगा, इसी उद्देश्य के साथ रेल सुरभि पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पत्रिका के निरंतर और सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं बधाई।

शुभकामनाओं के साथ।

चंद्रकिशोर

(चंद्र किशोर प्रसाद)
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

कविता

प्यार एक अनंत मीठा अहसास

-श्रीमती विजया गोस्वामी

मैं अकेली थी
अपने घर में
बचपन से सुना करती थी
लड़की के दो घर होते हैं,
पीहर का और ससुराल का –
फिर यह भी सुना कि
प्रेम का भी एक तीसरा घर होता है
दोनों घरों से बड़ा
जहां ये भी ओछे पड़ जाते हैं, अंततः –
मां का लाड़ दुलार
कभी न मिटने वाली मीठी गंध की तरह,
पिता का वात्सल्य
बहुत से रंग बिरंगे छातों की तरह छायादार –
एक लड़की जिनकी छाया में
निर्भय गुजार देती है
दिन महीने वर्ष और आयु,
भाई बहिनों का स्नेह
आंख-मिचौनी जैसा धूप-छांही
परंतु एक लड़की के जीवन में
जो भरता है उसका अधूरा पन
चला जाता है जो

बिंदु से असीम ऊंचाइयों तक

और उसका सहलाव माधुर्य लपेट लेता

रास संग में

अपने अंक में समेट कर

भर देता है

सारे शून्य-विवर वैकुण्ठ तक

जन्म जन्मांतर तक स्निग्ध हो बहता है जो वह

वही तो होता है प्यार

एक अनंत मीठे स्वाद की तरह अमर।

कवयित्री/लेखिका

कृषि विपणन निदेशालय,

राजस्थान सरकार से सेवानिवृत्त

****

सावधान व सतर्कता, नियमों का हो ज्ञान।

दुर्घटना होगी नहीं, शंटिंग के दौरान।

गाड़ी का अवपथन, सिगनल ऑन में पार करना तथा गाड़ी में आग लगना एक गंभीर समस्या है, जिससे रेलवे की छबि धूमिल होती है। हम सब का एक ही प्रयास होना चाहिए कि ऐसी अप्रिय घटना भविष्य में कभी भी घटित न हो।

कविता

अपने-अपने हिस्से का समंदर

- डॉ प्रवीण चोपड़ा

ज़िंदगी जाती है गुज़र
सी-फेसिंग फ्लैट की हसरत में
एक ज़माना था जब
समंदर देखने के लिए
पहले लेते थे लोकल, फिर बस-ऑटो
फिर उसके बाद....
20वीं मंजिल वाले सरकारी घर से
दो-तीन किलोमीटर दूर से ही
एक कमरे की खिड़की से.......
दिखने लगा समंदर।।
पर खुशी यह भी निकली फ़ानी
थी कुछ तो कमी अभी भी...
स्टेटस सिंबल की तरह फिर भी
घर आए मेहमानों को
कोई ट्रॉफी दिखाने की तरह
लेकर जाना उस खिड़की के पास
और दूर समंदर देखकर
उनकी खिली हुई बाँछें भी याद हैं....
होगा किराया कितना इस फ्लैट का.......
यह भी पूछना हमारा, फिर खुद ही बताना
खुली आंखों का उनकी
और भी खुल जाना हैरानी से
फिर ब्याँ करना हमारा,
"यही है असली मुंबई!"
आने वाले का सोच में पड़ जाना
डॉन में बच्चन का लहजा भी
था तो यही ।।
डायरेक्ट सी-व्यू फ्लैट की
लंबी कतार, जुगाड़, तिकड़म
नियमों को कूदते-फांदते
रिटायरमेंट की दहलीज़ पर
समंदर के सामने मिला फ्लैट,
तब तक घुटने भी दे चुके थे जवाब
समंदर के किनारे टहलना हुआ दुश्वार
फ्लैट की बालकनी में लेकिन
लगी थी ग्रिलें, ऐंगल मोटे
व्यू-खराब करना ही हो इनका मकसद जैसे,
सामने खड़ी दो इमारतों के जैसे...

फिर रिटायरमेंटी से पहले
आशियाना खुद का तलाशने की हुई शुरुआत
दूर-दूर तक न था नामों निशां समंदर का
हर तरफ सीमेंट की दीवारें, जंगल कंक्रीट के
फ्लैट देखें और भी... एक के बाद एक
किसी में समंदर दूर से दिखता तो,
एक बाथरूम की खिड़की से,
किसी बालकनी के एक कोने से...
सीधा-सीधा समंदर दिखना
अपने आशियाने से....
सपना था....... सपना ही रहा ।।

मुंबई में रहने की
जद्दोजहद सारी,
इसी में सिमटी,
समंदर का मेरा हिस्सा कहां
दिखता है क्या यह घोंसले से मेरे
बस ऐसे ही जाता है वक्त गुज़र
अपने-अपने हिस्से के समंदर को

तलाशते.... ढूंढते....
बचत उम्र भर की
झोंक कर भी
नहीं कर पाता सी-व्यूह का
जुगाड़ जब
गांव को लौट जाने का फैसला
मन को यह समझा कर
सही ठहराता...
अब क्या ही रखा है मुंबई में
किनारों से खुदी उधड़ती मुंबई में
नीचे से पूरी खुदी मुंबई में
गगनचुंबी इमारतों के झुरमुट में
खराब हवा के कोहरे में अब
कहां दिखता है वैसे भी समंदर
यहां तो अंगूर हैं ही खट्टे...
यह जीना भी कोई जीना है
लल्लू !!!
तेरा गांव पुकारे तुझे...
आ अब लौट चलें....

वरिष्ठ परामर्शदाता (स्वास्थ्य)
जगजीवन राम पश्चिम रेलवे चिकित्सालय, मुंबई सेंट्रल

****

कविता

मेरा देश

- सुधा मिश्रा द्विवेदी

हवाओं से पूछो, घटाओं से पूछो,
मेरे देश में क्या नहीं फिजाओं से पूछो।
ये केसर की क्यारी, गंगा का पानी,
ये ताजमहल कहता प्यार की कहानी।

ये गांधी औ' गौतम नानक की जमीं है,
तुम्हीं बताओ हमें क्या कमी है?

छः ऋतुओं का रंगीन आना औ' जाना
प्रकृति ने दिया हमें अनोखा खजाना।

संसार में कहीं नहीं है ये खजाना,
जो प्रकृति ने दिया हमें बिन बहाना।

कहीं पर लगी सावन की झड़ी है
कहीं इधर से उधर तक बर्फी पड़ी है।

कहीं लगे हैं झूले यहां से वहां तक,
कहीं नृत्य हो रहा है कत्थक।

कहीं गीत गाये है बिरहा की मारी
कहीं खिलखिलाये है नन्हीं दुलारी ।

हिमालय से आती बर्फीली हवाएं,
कहीं मरुस्थल की धूल भरी घटाएं।

संसार का सबसे ऊंचा है पर्वत हिमालय यहां है,
कहीं रेगिस्तान की दिखती अंनूठी फिज़ा है।

यहां है गंगा-यमुना का उर्वर द्वाब,
यहीं है काश्मीर धरती का ख्वाब।

किसी ने ऐसा देश न देखा न सुना है
मां प्रकृति ने बस हमीं को चुना है।
ये मेरा वतन है सभी से अनोखा,
नमन है इसको मेरा शत-शत नमन है।
विधाता को भी मेरा कोटिश नमन है
जिसने मुझको दिया यहां पर जन्म है।

सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी,
दक्षिण पूर्व रेलवे

****

सिगनल के संकेत पर, सदा दीजिए ध्यान।
अगला सिगनल लाल है, पीले से पहचान।।

लाल हमारा दोस्त है, मित्र, साथी, यार।
कुछ भी समझे आप पर, कभी करें न पार।।

तकनीकी लेख

ईपीडी एवं शंटिंग में संशोधन

- सुरज पाटिल

ईपीडी से पानी के रिसाव के कारण लाइन विफलता को रोकने के लिए ईपीडी में संशोधन

परिवर्तन :

एक अतिरिक्त कट-आउट-कोक एयर बॉक्स से ईपीडी को जाने वाले पाइप लाइन पर प्रदान किया गया है।

ईपीडी से पानी का रिसाव होने पर क्या करें?

एलडब्ल्यूएस टेस्ट कॉक को 6 बजे की स्थिति से 9 बजे की स्थिति तक घुमाएं, इससे पानी का रिसाव बंद हो जाता है लेकिन, एलडब्ल्यूएस बटन बाहर आ जाता है जो रीसेट नहीं हो पाता। फिर एयर बॉक्स पाइप पर स्थित कट-आउट-कोक को भी 3 बजे की स्थिति से 6 बजे की स्थिति तक घुमाएं। इसके बाद एलडब्ल्यूएस बटन रीसेट हो जाता है। फिर इंजन क्रैंक हो सकता है।

फ़ायदा :

1. ईपीडी से पानी के रिसाव के कारण लोकोमोटिव की लाइन पर फेल होने की समस्या हल हो जाती है।
2. ईपीडी का केवल 'कम पानी वाला हिस्सा (एलडब्ल्यूएस)' ही आइसोलेट हो जाता है। ईपीडी का 'कम क्रैंककेस निर्वात' वाला हिस्सा काम करने की स्थिति में रहेगा।
3. लाइन विफलता और उनके प्रतिघात को न्यूनतम करता है।

शंटिंग में एचएचपी लोकोमोटिव के उपयोग के लिए संशोधन

लोको आयडल चलने के दौरान, संप में निर्मित क्रैंककेस वैक्यूम बहुत कम होता है (पानी के स्तंभ के लगभग ½ इंच से भी कम)। कम क्रैंक केस वैक्यूम के कारण, एयर बॉक्स गैलरी और टीएससी में तेल जमा हो जाता है। इससे टीएससी के अंदर कार्बन जम जाता है, जिससे इसकी विश्वसनीयता प्रभावित होती है। इस समस्या को दूर करने के लिए, मौजूदा वेंचुरी सिस्टम को संशोधित किया गया। यह संशोधन इंजन के आयडल चलने के दौरान 02 इंच तक का वैक्यूम बनाता है।

फ़ायदा :

शंटिंग के दौरान लोकोमोटिव का उपयोग करते समय टीएससी में तेल/कार्बन के जमाव को कम करना/खत्म करना।

सीनियर सेक्शन इंजीनियर, एलएसआरएस

डीजल लोको शेड, कल्याण, मध्य रेल

****

कविता

अरुणिमा

- मंगेशरत्न सिंह

मां के आंगन के लिए एक नन्ही कली,
जिसकी खुश्बू से महकी आंगन की गली,
नन्हे कदमों से चलना संभालना उसका,
अक्स उसको था आया अपनी मातु का,
मां के आंगन खिली एक नन्ही कली,
जिसकी खुशबू से महकी आंगन की गली ----------- ।

वो जवां हो गई यौवना हो गई,
खेल उसको था भाया वॉलीबॉल का,
वो सफर ट्रेन का उसको घातक हुआ,
लूटा कुछ गुंडों ने था उसे दुख हुआ,
किया उसने विरोध तो हादसा हुआ,
चलती गाड़ी से फेंका उठाकर उसे,
वह गिरी ट्रैक पर सामने ट्रेन थी,
अधमरी-सी पड़ी थी वह लाचार थी,
मां के आंगन के लिए एक नन्ही कली ------------।

चूहों ने नोच कर उसके जिस्म के अंगों को,
दर्द और था बढ़ाया जवां बाला का,
ट्रैक पर वो पड़ी मौत से वो लड़ी सच करने को सपना कमर कस चली,
लोगों ने धमकाया, डराया उसे,
उसने एक न सुनी जोखिमों पर चली,
जाकर परचम लहरा आई एवरेस्ट पर,

वह तिरंगा लहरा आई एवरेस्ट पर,
टांगें थीं कटी पर कोई गम नहीं,
मां के आंगन खिली एक नन्ही कली,
जिसकी खुश्बू से महकी--- ।

काम ऐसा किया नाम ऐसा किया,
अच्छे-अच्छों ने उसको नमन था किया,
शेरपा - बछेंद्री से जो साहस मिला,
अरुणिमा नाम उसने था सार्थक किया,
मां के आंगन खिली थी जो नन्ही कली,
उसके साहस से महकी भारत की गली,

शारीरिक प्रशिक्षण प्रशिक्षक,
भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी,
वड़ोदरा, गुजरात

****

कर्मशील कर्मठ सदा, करते कर्म महान।
भाग्य भरोसे जो रहे, महा मूर्ख नादान।।

डयूटी पर हरगिज नहीं, गांजा, भांग, शराब।
सेवन कर पकड़े गए, फ्यूचर हुआ खराब।।

घर का टेंसन घर में, यहां काम की बात।
नींद और आलस्य से, दूर रहें दिन-रात।।

कविता

दर्पण, धूल और रिश्ते

- अनिल कुमार तिवारी

कितने दर्पण तोड़ोगे, दागी चेहरे की खातिर,
कितने रिश्ते छोड़ोगे, बागी तेवर की खातिर,

समय रहते पोंछ लेते जो, मन दर्पण की धूल,
कमियां सुन यूं स्वीकारते, मान भी लेते भूल,

झुक जाते हैं जो ऊंची मंजिल को चढ़ते-चढ़ते,
देखें जाते हैं उनके पदचिह्न, आगे बढ़ते-बढ़ते,

मैं, मेरा परिवार, मेरे रिश्तों से थोड़ा आगे बढ़िए,
वसुधैव कुटुम्ब अट्टालिका की कुछ सीढ़ी चढ़िए,

जब जाओगे तुम, न दर्पण होगा, न रिश्ते ही होंगे,
पावन जन्म भूमि की धूल, राख, अस्थि ढ़ेर होंगे,

ये प्यारा चेहरा ही सिर्फ़ पहचान रह जाए आपकी,
चुकता कर ही लेनी होगी हमें गठरी अपने पाप की,

सेवानिवृत्त, सहायक मंडल
विद्युत इंजीनियर (निर्माण),
पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल

****

कविता

वृक्षारोपण

- **प्रमोद सोनी**

खूब पेड़ लगाएं हम नए साल में
लाएं हरित क्रांति हम भोपाल में ।

हर पौध बड़ी हो, फले और फूले
सुरक्षित रहे धरा पर हर हाल में ।

ये ध्येय हमारा हो, पर्यावरण बचे
शिकन न आए वसुधा के भाल में ।

धरा स्वयं देती है, हमें ऑक्सीजन
क्यों जाएं लेने हम अस्पताल में ।

कटे नहीं वृक्ष कोई, कहीं भी कभी
सुधार लें जो भूल किये भूतकाल में ।

मंडल रेल प्रबंधक
कार्यालय, बिलासपुर, दक्षिण
पूर्व मध्य रेलवे से सेवानिवृत्त

राग-विराग

- **प्रमोद कुमार**

तुम मेरे हृदय-कुंज में
उपवन में सुमन जैसे,

तुम वीणा के तारों से
फूटते स्वर रस राग के,

तुम हो मेरी छाया जैसे
चांदनी शशि की फैली
इस सुन्दर वसुंधरा पर,

तुम हो कोमल कल्पना
मेरे चारु राग-विराग के

तुम हो कारक, तृप्ति के
मीठी निद्रा मेरे निशा की

तुम गुरु च दिग्दर्शक मेरे
तुम प्राण-प्रिय जीवन के

पूर्व वरिष्ठ अनुवादक,
महाप्रबंधक कार्यालय,
पूर्व मध्य रेलवे, हाजीपुर

****

कविता

मैं खाकी हूं

- **सिद्धार्थ कुमार गौकरन**

दिन हूं रात हूं , सांझ वाली बाती हूं,

मैं खाकी हूं।

आंधी में, तूफान में, होली में, रमजान में, देश के सम्मान में, अडिग कर्तव्यों की अविचल परिपाटी हूं,

मैं खाकी हूं ।

तैयार हूं मैं हमेशा ही, तेज धूप और बारिश, हंस के सह जाने को, सारे त्यौहार सड़कों पे,

भीड़ के साथ मनाने को, पत्थर और गोली भी खाने को, मैं बनी एक दूजी माटी हूं,

मैं खाकी हूं।

विघ्न विकट सब सह कर भी, सुशोभित सज्जित भाती हूं, मुस्काती हूं, इठलाती हूं, वर्दी का गौरव पाती हूं,

मैं खाकी हूं।

तम में प्रकाश हूं, कठिन वक्त में आश हूं, हर वक्त मैं तुम्हारे पास हूं, बुलाओ मैं दौड़ी चली आती हूं,

मैं खाकी हूं ।

भूख और थकान की वो बात ही क्या, कभी आहत हूं, कभी चोटिल हूं और कभी तिरंगे में लिपटी, रोती सिसकती छाती हूं, मैं खाकी हूं।

बदलते परिवेश में हर पल, अपनी अहम भूमिका निभाती हूं।

मैं खाकी हूं।

हर पल सेवा के मार्ग में बिना डर, भय व लालच के तत्पर रह्ती हूं।

मैं खाकी हूं।

अपनी बल की छवि धूमिल ना हो, इसका भरसक ख्याल रखती हूं।

शब्द कह पाया कुछ ही, आत्मकथा में बाकी हूं,

मैं खाकी हूं।

एसआईपीएफ,
मुंबई मंडल, मध्य रेल

****

कविता

पति परमेश्वर

- **त्रिपुरारी कुमार**

मेरा वर भी तुम, वरदान भी तुम!
मेरा गुरुर और अभिमान भी तुम!

दर्पण हो तुम, तर्पण हो तुम!
पदार्पण तुम्हीं से, सर्वस्वसमर्पण तुम्हीं पर!

मेरे संस्कार हो तुम, जीवन के अलंकार हो तुम!
पवित्र विचार, मेरे कर्णधार हो तुम!

चहरे की मुस्कान हो, मेरी पहचान हो तुम!
इस परिंदे का पंख और उड़ान हो तुम!

करुणाई, जम्हाई और अंगडाई भी तुम!
मेरे जीवन संगीत की शहनाई भी तुम!

रूबरू रहबर दिलबर दिलदार हो तुम!
खुश्बू और ख़ुशगवार हो तुम!

होठों की लाली, कान की बाली हो तुम!
बालों में गजरा, माथे का सेहरा हो तुम!

माथे का घूंघट, बच्चों का आँचल हो तुम!

सोलह श्रृंगार, पूरा का पूरा परिवार हो तुम!

खिलौना हो तुम, लाठी भी हो तुम!
नौका, पतवार और खेवनहार हो तुम!

सावन की फुहार, वसंत की बहार हो तुम,
वैसाख में शिकंजी, पुष्य की रजाई हो तुम!

बूढ़े बाप का सहारा, नौका का किनारा हो तुम!
मां का दुलारा, परिवार का सहारा हो तुम!

नाशिका की श्वाश, जीवन की आस हो तुम!
सबको एहसास है, पर्व की मिठास हो तुम!

खेत की माटी, बूढ़े बाप की लाठी हो तुम!
घर की टाटी, मेरे जीवन साथी हो तुम!

गुड़ भी तुम, गुरुर भी हो तुम!
सौभाग्यवती की सुहाग का सिंदुर हो तुम!

मेरा सजना भी तुम, साजन भी तुम!
मेरे पति भी तुम, पतिपरमेश्वर भी तुम!

मुख्य वाणिज्य निरीक्षक,
पुणे, मध्य रेल

****

लेख

हिन्दी तथा मराठी के तत्सम शब्द और तद्भव शब्द

- **विमी घनेलू**

अपना यह भारत देश, विविध सांस्कृतिक सुंदरता की सजधज लिये हुए तथा विविध भाषा के रंगों से भरा हुआ एक अद्‌भुत देश है। अपने इस देश में विविध प्रांतों में विविध भाषा बोली जाती है, तथा अपने भारत देश की अधिकतर भाषाएं **संस्कृत भाषा** से ही जन्मी है। दक्षिण प्रांतीय कुछ भाषाओं के अपवाद से बाकी सभी भाषाएं संस्कृत से ही जन्मी हैं।

कुछ **तत्सम शब्द और कुछ तद्भव शब्द मिलाकर सभी भारतीय भाषाएं बनी हैं। तत्सम शब्द** जो होते हैं वो संस्कृत भाषा से जैसे हैं वैसे ही लिये जाते हैं उनका अर्थ बदलता नहीं । तत् का अर्थ है –उसके तथा सम् का अर्थ है – समान। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा के वे **शब्द** जो हिंदी भाषा में ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं, **तत्सम शब्द** कहलाते हैं। उदाहरण अग्नि, क्षेत्र, अज्ञान, अन्धकार, चंद्र, बांग्ला, छात्र, विज्ञान, क्षत्रिय, क्षेत्र, ज्ञानी, अमूल्य, उपहार, अंगुष्ठिका, मिष्ठान आदि।

तद्भव शब्द वे होते हैं जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में अपनाने पर अपना अर्थ स्वरूप रूप बदल लेते हैं। **तद्भव शब्द** दो शब्दों तत्+भव से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है – उससे उत्पन्न। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा के शब्द जो कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी शब्दावली में आ गए हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है। जैसे- आग, अकाज, खेत, अंधेरा, चांद, अमोल, अंगूठी, कौड़ी, गहरा, हाथी, मिठाई आदि।

हिंदी भाषा और मराठी भाषा दोनों ही देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदी और मराठी भाषा में कितने ही समान शब्द हैं, जो **संस्कृत भाषा** से आते हैं, इसका कारण है, दोनों ही भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा ही है।

ऐसे कितने ही शब्द हैं जो दोनों भाषाओं में है परंतु उनके अर्थ थोड़े से भिन्न हैं। यहां कुछ शब्दों की सूची प्रस्तुत है, जो शब्द हिंदी और मराठी भाषा दोनो ही में प्रयुक्त होते हैं, परंतु उनके अर्थ भिन्न और विविध छटा लिए हुए हैं, हिंदी और मराठी भाषा दोनों भाषा के ज्ञाता के लिए यह जानना काफी मनोरंजक हो सकता है।

अगर आप लोगों के पास भी इसी प्रकार के और शब्द होंगे तो मुझे अवश्य बताएं मेरी भी जानकारी बढ़ेगी। प्रस्तुत है ऐसे शब्दों की सूची---------

दोनों भाषांत समान शब्द	**हिन्दी अर्थ और वाक्य प्रयोग**	**मराठी अर्थ आणि वाक्य प्रयोग**
शिक्षा	लिखाई-पढ़ाई/ ज्ञानार्जन	किसी अपराध की सजा पाना

दोनों भाषाओं के समान शब्द	हिन्दी अर्थ और वाक्य प्रयोग	मराठी अर्थ और वाक्य प्रयोग
मासिक	माह में एक बार होने वाली घटना	कोई भी पत्रिका, महिलाओं की माहवारी
चेष्टा	कोशिश करना	मजाक उड़ाना/मसखरी करना
संधी	जुड़ाव/युद्ध का संधि प्रस्ताव	मौका/अवसर
सहसा	अचानक suddenly	आराम से easily
ग्लानि	पछतावा/अफसोस,अध:पतन	घबराहट/चक्कर, शारीरिक शिथिलता
दाखिला	प्रविष्ट होना/दिखाई देना	अड्मिशन form
प्रकृति	Nature/दुनिया/कुदरत	मिजाज स्वभाव/नियति/तबीयत
अर्थात	मीनिंग/मतलब	Of course, बेशक
अवकाश	छुट्टी, वैकेशन	फुर्सत से, आराम से, आकाश
परस्पर	आपस में, आपसी, mutual	लगे हाथों, साथ साथ simultaneously
हस्ताक्षर	Signature, सही	हैन्ड राइटिंग, लिखावट
हेर	देखना ताड़ना, खोजना	जासूस, जासूसी
प्रत्यय	प्रमाण, suffix	अनुभव होना
लक्ष्य	Aim, उद्देश्य	ध्यान, अटेन्शन
पुरस्कार	इनाम, prize	सपोर्ट करना
कलम	पेन, लिखने में काम आनेवाली	Clause, कानून की दफा
टिप्पणी	Remarks रिंमार्क कमेन्ट	दुर्भावना से किया रीमार्क
प्रेत	भूत, प्रेत, प्रेतात्मा	मृत शरीर, डेड बॉडी
साहित्य	Literature, कथा कविता	Ingredients, पदार्थ के लिये उपयुक्त वस्तुएं
लौकिक	सांसारिक/इसी लोक का	यश/कीर्ति/प्रसिद्धि fame
संसार	दुनिया, पृथ्वी, वर्ल्ड	वैवाहिक जीवनयापन करना/पूरी जिंदगी
स्वस्थ	अच्छी सेहत/हेल्थी	आराम से फुरसत में होना

दोनों भाषाओं के समान शब्द	**हिन्दी अर्थ और वाक्य प्रयोग**	**मराठी अर्थ और वाक्य प्रयोग**
चिरंजीवी	लंबी आयु वाला व्यक्ति	सुपुत्र/बेटा
सहज	प्राकृतिक रूप से, naturally	यूं ही/ आराम से/easily
विचार	सोचना/thought	प्रश्न पूछन/ask
राग	गायन का प्रकार/अनुराग	क्रोध करना
अभ्यास	किसी हुनर के लिये प्रैक्टिस करना	लिखाई पढ़ाई/ज्ञानार्जन/education
सहवास	शारीरिक संबंध होना	किसी का महज साथ देना या साथ रहना
दंड	सजा/penalty	हाथ का ऊपरी हिस्सा
कादंबरी	एक लड़की/नायिका का नाम	कोई भी उपन्यास/पुस्तक

मुख्य कार्यालय अधीक्षक (दावा),
प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक कार्यालय,
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

****

पल-पल रहें सतर्क हम, संरक्षा का प्रारंभ।
कहें किसी को बाद में, पहले खुद आरंभ।।

संरक्षा व समय पालन, यही हमारा धर्म।
रेल सदा उन्नति करे, ऐसा करिए कर्म।।

नियम पढ़ें, पढ़ाएं फिर, नियम सदा दिन-रात।
नियमों का पालन करें, दूर रहे अपघात।।

लेख

भारतीय रेल के बारे में प्रकाशित रोचक पुस्तकें

-विमलेश चंद्र

भारतीय रेल अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं विरासत उपलब्धियों के लिए सम्पन्न तो है ही साथ ही साथ भारतीय रेल के गौरवपूर्ण इतिहास को लिपिबद्ध करने के लिए भी सुसंपन्न भी है। जी हां हम बात कर रहे हैं, भारतीय रेल के इतिहास को काफी टेबल बुक, पुस्तक और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से रेलवे से जुड़ी जानकारी को जनसामान्य को उपलब्ध कराने के लिए भारतीय रेल और रेलवे में रुचि रखने वाले लोगों ने रेलवे से जुड़ी अनेक पुस्तकों के लेखन और प्रकाशन के बारे में काफी प्रयास किया है जिसके फलस्वरूप अनेक रेलवे पुस्तक उपलब्ध हो पाई हैं। भारतीय रेल के सभी मंडलों, क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन यूनिटों, कारखानों, उपक्रमों और रेलवे से जुड़े अन्य बड़े कार्यालयों से अपनी-अपनी हिंदी गृह पत्रिकाएं प्रकाशित होती रही हैं। इस प्रकार इनकी कुल संख्या पचास के आसपास होगी। विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे एवं उत्पादन यूनिटों द्वारा भी अपनी-अपनी काफी टेबल बुक और सामान्य पुस्तक प्रकाशित की गई हैं। रेलवे में रुचि रखनेवाले अनेक लोगों ने भी भारतीय रेल के बारें में अनेकों पुस्तकें लिखीं और प्रकाशित करवाई हैं। भारतीय रेल पर अनेकों पुस्तकें प्रकाशित तो हुई हैं, किन्तु इनकी कम उपलब्धता और ज्यादा मूल्य होने के कारण यह जन सामान्य में प्रचलित नहीं हो पाई हैं। फिलहाल कुछ मुख्य-मुख्य पुस्तकों की चर्चा इस लेख में की जा रही है।

भारतीय रेल के इतिहास में अब तक यदि किसी ने सबसे ज्यादा रेलवे पुस्तकें लिखी हैं तो वह थे, स्व. आर. आर. भंडारी जी। जिन्होंने भारतीय रेल से जुड़ी लगभग 2 दर्जन पुस्तकें लिख कर एक रिकार्ड बनाया था। यह न केवल महान लेखक थे, बल्कि रेलवे के सर्वोच्च पद अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के पद से भी सेवानिवृत्त हुए थे। इन्हें “चीफ मेमोरी ऑफिसर” और “रेल इतिहास के ज्ञाता” निकनेम से भी जाना जाता था। इनकी पुस्तकों में इंडियन रेलवेज 150 ग्लोरीयर्स इयर्स (2005), वेस्टर्न रेलवे मीटर गेज सिस्टम (1987), वेस्टर्न रेलवे नैरोगेज़ सिस्टम (1997), दी ब्ल्यू चिप रेलवे (1987), एक्सोटिक इंडियन माउंटेन रेलवे (1984), कालका-शिमला रेलवे (2003), कालका-शिमला एंड कागड़ा वाली रेलवे (1983), जोधपुर रेलवे (1982), दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (2001), लोकोमोटिव इन स्टीम (1981), रेल ट्रांसपोर्ट म्यूजियम (1980), साऊथ इंडियन रेलवेज–मार्च टू मिलेनियम (2001), वेस्टर्न रेलवे–ए ग्लोरीयस सागा (2008), आई.एस.ओ.-9000 (1992), प्रेजेंटेशन स्किल्स (1994), नीलगिरी माउंटेन रेलवे (2002), अजमेर वर्कशॉप (2002), सदर्न रेलवे–ए सागा ऑफ 150 ग्लोरीयर्स ईयर्स (1852-2003), (2003), माथेरान लाइट रेलवे (2004), कांगड़ा वैली रेलवे (2006), वेस्टर्न रेलवे ब्रॉडगेज सिस्टम (2008), दक्षिण रेलवे–150 वर्षो की यशस्वी गाथा (2006), ए पीप इन टू इंडियन रेलवे हेरिटेज, इवैल्यूवेशन ऑफ साउथ ईस्ट रेलवे नामक पुस्तकें शामिल हैं।

क्षेत्रीय रेलवे द्वारा और रेलवे में रुचि रखने वाले लोगों के द्वारा लिखी या प्रकाशित की गई काफी टेबल बुक और रेलवे पुस्तक- क्षेत्रीय रेलवे द्वारा और रेलवे में रुचि रखने वाले लोगों के द्वारा प्रकाशित की गई उनके काफी टेबल बुक और सामान्य रेलवे बुक के बारें में, पश्चिम रेलवे के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में बाम्बे-सबअर्बन रेलवे सिस्टम, हिस्ट्री ऑफ बाम्बे सबअर्बन रेलवे (1853-1985), वेस्टर्न रेलवे–ए ग्लोरीयस सागा, वेस्टर्न रेलवे मीटर गेज सिस्टम, वेस्टर्न रेलवे नैरोगेज सिस्टम, मुंबई लोकल, एंकोरिंग ए सिटी लाइन (1899-1999), वेस्टर्न रेलवे हेरिटेज, ट्रेडीसन एंड लेजेंड, हिस्ट्री ऑफ नैरोगेज सेक्शन ऑफ वड़ोदरा डिवीजन, डभोई लाइन्स–रेलवे ऑफ योर(बिगनिंग ऑफ नैरोगेज़) नामक पुस्तकें शामिल हैं। मध्य रेलवे के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में इट वाज इनडीड पोसिबल (नागपुर), बुक ऑन जीआईपी रेलवे, हिस्ट्री ऑफ ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस–अतीत के अध्याय, मध्य रेल–भारत की पहली रेल, सिटी आइकान विक्टोरिया टर्मिनस बाम्बे नामक पुस्तकें शामिल हैं। पूर्व रेलवे कोलकाता के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में हावड़ा स्टेशन–वाइब्रेंट एडिफिस, सिम्फ़ोनी ऑफ प्रोग्रेस–ए सागा ऑफ ईस्टर्न रेलवे (1854-2003) नामक पुस्तकें शामिल हैं। उत्तर रेलवे के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में ब्रिज, बिल्डिंग एंड ब्लैक ब्यूटीज़ ऑफ नार्थन रेलवे, कालका-शिमला रेलवे, पीर पंजाब टनल, कागड़ा वैली रेलवे नामक पुस्तकें शामिल हैं। पूर्वोत्तर रेलवे के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में त्रिवेनी ऑफ रेलवेज–स्ट्रोरी ऑफ नार्थ-ईस्टर्न रेलवे (1875-2010), पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की इंडियन रेलवेज–दी फ़ाइनल फ्रंटियर्स नामक पुस्तक शामिल है। दक्षिण रेलवे के बारें में प्रकाशित पुस्तकों की सूची में मारवेल्स ऑफ दी साऊथ इंडियन रेलवेज (1859-1915), दक्षिण रेलवे–150 वर्षो की यशस्वी गाथा (1856-2006), साऊथर्न रेलवे–ए सागा ऑफ 150 ईयर्स (1852-2003), नीलगिरी रेलवे, साऊथर्न मराठा रेलवे (गोवा रेलवे डब्ल्यू.आई.पी.रेलवे), दी मद्रास रेलवे-1849 नामक पुस्तकें शामिल हैं। दक्षिण मध्य रेलवे की व्हील्स ऑफ चेंज-एस.सी.आर.,दक्षिण-पूर्व रेलवे की साऊथ ईस्टर्न रेलवे–मार्च टू न्यू मिलेनियम, गोल्डेन रीच–ए रेलवे स्टोरी, दी ब्ल्यू चिप रेलवे, ईवैल्यूवेशन ऑफ एसई रेलवे, पूर्व-मध्य रेलवे की फाउंडेड ऑन ए रीच लेजैली–जर्नी ऑफ ईस्ट सेंट्रल रेलवे, पूर्व तटीय रेलवे की इफेक्ट ऑफ हैवी हौल ट्रेन ऑन कोट्टावलासा–किरांडुल रेलवे लाइन, उत्तर-मध्य रेलवे की इमरजेंस ऑफ ए लेजेंड फ्राम ए लेजसी, दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे की दी रोरिंग जर्नी–नागपुर छत्तीसगढ़ रेलवे टू साऊथ-ईस्ट सेंट्रल रेलवे, कोलकाता मेट्रो रेलवे की इडियन फर्स्ट कोलकाताज प्राइड-मेट्रो रेलवे, आरडीएसओ लखनऊ की पुस्तक 50 ईयर्स ऑफ आरडीएसओ-पावरिंग इंडियन रेलवे, ट्रासफ़ार्मिंग रेलवेज नामक पुस्तकें शामिल हैं। चितरंजन रेल इंजन कारखाने की पुस्तक स्टोरी ऑफ चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स, प्रथम संस्करण-2003 एवं दूसरा संस्करण–2009, सवारी डिब्बा कारख़ाना चेन्नई की पुस्तक ट्रैसिंग द रूट-हिस्टोरी अन ईयर्थड (1949-1955), फ्राम वन ईरा टू एनादर-ए मेमोरेबल जर्नी, सिस्टी ईयर्स-डायमंड मेमोरीज, आईसीएफ जर्नी- धेन एंड नाऊ, रेल व्हील कारख़ाना की पुस्तक रिइनवेंटिंग दी व्हील-एनादर बेंगलूर सागा, उत्तर-पश्चिम रेलवे की जोधपुर रेलवे नामक पुस्तकें शामिल हैं। कोंकण रेलवे की पुस्तक कोंकण रेलवे–ए ड्रीम कम टू, कोंकण रेलवे-इवेंटफुल 25 ईयर्स, ए ट्रेटीज़ ऑन कोंकण रेलवे, कोंकण नामा–ए जर्नी एक्रास टाइम, दिल्ली मेट्रो रेलवे की ए ड्रीम रिवीसीटेड डीएमआरसी, ए ड्रीम कम टू, इमेज ऑफ एन अर्बन ट्रान्सफार्मेशन दी डेलही मेट्रो नामक पुस्तकें शामिल हैं।

भारतीय रेल से जुड़ी अन्य पुस्तकें- भारतीय रेल से जुड़ी पुस्तकों में इंडियन रेलवेज–ग्लोरीयस 150 इयर्स, 150 ग्लोरीयर्स इयर्स ऑफ इंडियन रेलवेज, इंडियन रेलवे हिस्ट्री–ए रिसर्च हैंड बुक, ग्रेड कंटीनेंटल रेलवे जर्नी, इंडियन रेलवेज़ मोर माईल्स-मोर स्माईल्स, इंडियन रेलवेज, डिस्कवर इंडिया बाई रेल, इंडियाज रेलवे मेट्रो मैन-ई श्रीधरन, हाल्ट स्टेशन इंडिया, इंडियन रेलवेज-द बिगनिंग, इंडियन रेलवेज एट ए ग्लान्स बुक, इंडियन रेलवेज–द वीविंग ऑफ द नेशनल टेप्स्ट्री, भारतीय रेल–सामान्य ज्ञान, इंडियन रेलवेज दी ग्रोविंग लाइफ लाइन, इंडियन रेलवेज–आर्किटेक्चरल हेरिटेज, भारतीय रेल के सुनहरे पन्ने, रेलवे ईयर्स बुक, इंडियन रेलवेज–ईयर बुक, रेल रोड्स आ योर–डभोई रेल वडोदरा, रेलों का विचित्र संसार, रेलवे डाक टिकट, नेशनल रेल म्यूजियम बुकलेट, भारतीय रेल–सामान्य जानकारी, भारतीय रेल-इतिहास एवं उपलबधियां, इंडियन रेलवेज-एक प्रदर्शनीय, भारतीय रेल का इतिहास-एक सौ वर्ष, डाक टिकटों का सफर–रेलवे पर विशेष नजर, लिंकिंग पैराडाईज़–कश्मीर रेलवे, लोकोमोटिव इन स्टीम, इंडियन रेलवे-टूवार्ड्स–ए सफर टूमैरो, रेलवे कान्स्ट्रक्शन इन इंडिया, इंडियन रेलवेज-वन हंड्रेड ईयर्स, ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन रेलवेज, दार्जिलिंग हिमालय रेलवेज, एक्सोटिक इंडियन माउंटेन रेलवे, नीलगिरी रेलवे, रेल ट्रांसपोर्ट म्यूजीयम, ए पीप इन टू इंडियन रेलवेज हेरिटेज, माथेरान रेलवे, इंडियन रेलवेज, ए व्हील्स ऑफ इंडिया, स्टीम लोकोमोटिव इन इंडिया, रेल परिवहन का स्वरूप, रेलवेज फॉर डेवलपिंग कंट्रीज, रेलवे इन मार्डेन इंडिया, इंडियन रेलवेज ऑन हंडरेड ईयर्स, स्टैम्प ऑन इंडियन रेलवेज, रेलवेज जर्नी थ्रू पोस्टल स्टैम्प, इंडियन रेलवेज-ट्रांसपोर्ट मैनेजमेंट, मैनेजिंग इंडियन रेलवेज-दी फ्यूचर अहेड, इंडियन रेलवेज-सेफ़्टी अल्टिमेटम-गोल टू प्रीवेंट एक्सीडेंट, स्टीम इन इंडिया, रेलवेज आफ द राज, रेलवे इन इंडिया–ए लेजेंड, लाइन क्लीयर टू इंडिया, इंडियन रेलवेज-कलकत्ता इलेक्ट्रिफिकेशन, रेलवेज इन ब्रिटिश इंडिया, डेवलपमेंट ऑफ इंडियन रेलवेज, इंजन ऑफ चेंज नामक पुस्तकें शामिल हैं, साथ ही साथ इस लेखक की रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कृत पुस्तक "भारतीय रेल–एक परिचय" (तीन संस्करण प्रकाशित) नामक पुस्तक और भारतीय रेल के अनोखे पुल, भारतीय रेल के गौरवपूर्ण 170 वर्ष तथा कश्मीर घाटी रेलवे पुस्तक शामिल है। इस लेख के लेखक के पास इन सभी पुस्तकों में से अधिकांश पुस्तकें उपलब्ध हैं। विशेष कर भारतीय रेलवे द्वारा प्रकाशित लगभग सभी काफी टेबल बुक। इस प्रकार ये सभी पुस्तकें, रेलवे के बारे में रेलवे के पाठकों के लिए एक रोचक जानकारी वाले संग्रह हैं।

सेवानिवृत्त रेल अधिकारी, पश्चिम रेलवे

मकान नंबर-32, शिवाय बंगलोज,

पोस्ट-बाजवा, वडोदरा, गुजरात

****

सिगनल ऑन में पार करना एक गंभीर दुर्घटना का पहला कदम है,

इसे हमें रोकना ही होगा।

लाल पार मत कीजिए, सुनों रेल के लाल।

सफल सारथी है वही, समझे रथ की चाल।

कहानी

घर जमाई

- आर.एस. माथुर "राज"

सावित्री कॉलेज के पुस्तकालय में अकेली बड़ी उदास बैठी थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। व्यक्ति जब बहुत ही विकट परिस्थिति में पहुंच जाता है और किसी से अपना दुख साझा नहीं कर पाता है तो इसी तरह अकेले अपने आंसू बहाकर अपना दुख हल्का करने का प्रयास करता है।

तभी उसे ढूंढता हुआ आकाश पहुंच गया। उन दोनों का विवाह होना तय हुआ था। उसे सावित्री की उदासी और आंखों में आंसू देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसकी उदासी का कारण पूछा। तुम यहां अकेली बैठी हो और मैं तुम्हे कहां-कहां ढूंढ रहा था।

तुम इतनी उदास क्यों हो? मुझे भी चिंता हो रही है। शीघ्र ही हम दोनो का विवाह होने वाला है और इस खुशी के अवसर पर तुम्हारी उदासी और आंखों में आंसू मुझे व्यथित कर रहे हैं।

सावित्री चुप रही। उसकी आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

तुम चुप क्यों हो बोलो क्या बात है? मुझसे रहा नहीं जा रहा है। हम दोनो एक दूसरे को प्यार करते हैं। दोनों का सुख-दुख सब एक है। आकाश के बहुत जिद करने पर सावित्री ने बताया कि उसके पिता ने आकाश के पिता के द्वारा मांगे गए दहेज के रुपयों के लिए अपना घर और जमीन गिरवी रख दिया है। विवाह उपरांत अगर मेरे पिता ने कर्ज के रुपए नहीं चुकाए तो वे बेघर हो जाएंगे और भूखे मरेंगे। इसलिए न चाहते हुए भी मैं अब इस विवाह को नहीं करना चाहती। सुनकर आकाश को बड़ा आश्चर्य हुआ और दुख भी हुआ। उसने दहेज के रुपयों के बारे में पूछा - दहेज की रकम कितनी है? सावित्री ने बताया पूरे दस लाख रुपए हैं।

आकाश ने कहा - तुम चिंता मत करो रुपयों का इंतजाम मै कर दूंगा, तुम अपने पापा को दे देना और जैसा मैं कहता हूं वैसा करो। विवाह बड़े धूमधाम से संपन्न हो गया। सावित्री के पिता ने विवाह से पूर्व ही दहेज के रुपए आकाश के पिता को दे दिए थे। वे एक बड़े उद्योगपति थे। रूपयों की कोई कमी नहीं थी। आकाश उनका इकलौता बेटा था। आकाश की जिद और उसके प्यार के चलते उन्होंने सावित्री के साथ रिश्ता स्वीकार किया था।

विवाह उपरांत दुल्हन की विदाई के समय आकाश ने दुल्हन की विदाई को रोकते हुए कहा-दुल्हन बिदा नहीं होगी बल्कि मैं अब अपने ससुराल में ही रहूंगा, घर जमाई बनकर। क्योंकि दुल्हन के पिता ने मुझे दस लाख रुपए में मेरे पिता से खरीद लिया है।

उसकी बात सुनकर उसके पिता, बाराती और घराती सभी दंग रह गए।

उसके पिता ने उसे बहुत समझाया बेटा यह हमारे समाज का वर्षों से चला आ रहा रिवाज है इसलिए मैने भी वही किया। अब तुम जिद मत करो और दुल्हन को बिदा कर अपने घर चलो। रिवाज अगर किसी को बेघर और भूखा कर दे तो क्या ऐसे रिवाज को मानना चाहिए पापा? अगर आपको रिवाज निभाना है तो दहेज के नाम पर एक रुपया लेकर बाकी रुपए लौटा दें, तभी दुल्हन की विदाई होगी। आपके पास पैसे की कोई कमी नहीं है। उसकी जिद के आगे उसके पिता ने मजबूर होकर दहेज के सारे रुपए सावित्री के पिता को लौटा दिए। सावित्री रोते हुए आकाश के हृदय से लग गई।

वरिष्ठ अनुवादक,
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

****

लेख

वैजयंती माला : नृत्य और अभिनय का अद्भुत संगम

- डॉ. सरस्वती अय्यर

उन्होंने एक फिल्म में अपना नाम कविता क्या रख लिया, उनके प्यार में लोग कवि बन गए, उन्होंने बदन पे सितारों को इस तरह से लपेटा कि हर कोई उनका मुरीद हो गया। उन्होंने अपने होंठों पर बात कुछ ऐसे दबा ली कि हर जवां दिल झूम उठा। उनके कान का एक बाला क्या खो गया पूरा हिंदुस्तान उसे ढूंढने लगा, उनके चिकने चेहरे की सुंदरता पर दुनिया की नज़र फिसलने लगी, एक पापी बिछुआ उनके पैरों पर चढ़ गया तो दर्द लाखों लोगों को होने लगा, नागिन बनकर उन्होंने मन डोले मेरा तन डोले पर नृत्य क्या किया पूरा देश नागिन की धुन पर लहरा उठा। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं गंगा-जमुना की अविस्मरणीय "धन्नो", "संगम" की शालीन राधा, "देवदास" की सोने के दिल वाली तवायफ चंद्रमुखी, साधना की गरिमामयी चम्पाबाई, "मधुमती" की मासूम चंचल मधु, 'नया दौर' की मेहनती 'रजनी', "सूरज" की अत्यंत सुंदर राजकुमारी अनुराधा, भारतीय सिनेमा की पहली महिला सुपरस्टार, अद्वितीय नृत्यांगना और मशहूर अभिनेत्री डॉ. वैजयंती माला बाली की। वर्ष 2024 में उनको पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है। आइए हम इस बहुमुखी प्रतिभा की धनी अभिनेत्री के प्रेरणादायी जीवन को करीब से जानते हैं।

वैजयंती माला जी का जन्म चेन्नई में एम.डी. रमन और वसुंधरा देवी के घर हुआ था, पर पालन-पोषण नानी के द्वारा हुआ। नानी ने वैजयंती को छोटी उम्र से अनुशासन से जीवन जीना सिखाया था। वैजयंती की कमर सीधी रहे इसलिए उनकी नानी उन्हें बिस्तर की जगह हमेशा एक चटाई पर सुलाया करती थी। छोटी उम्र से ही वैजयंती की नृत्य शिक्षा शुरू कर दी गई थी। स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ वैजयंती भरतनाट्यम की शिक्षा भी ले रही थी। 13 साल की उम्र में तमिल नववर्ष के दिन वैजयंती माला का पहला स्टेज शो था। उनके नृत्य कार्यक्रम के दौरान उनका पैर वहां पड़े बिजली के नंगे तार से छू गया, जिससे वह झुलस गई। लेकिन साहसी वैजयंती माला ने जख्मी पैर और दर्द की परवाह किए बिना नृत्य प्रदर्शन किया और उनके चेहरे पर उनकी तकलीफ़ जरा भी नहीं झलकी। अगले दिन के अखबारों में उनके नृत्य कौशल और साहस की सराहना करती हुई खबरें और तस्वीरें प्रकाशित हुईं। एक अख़बार ने लिखा "वरूगिरल वैजयंती यानी स्वागत है वैजयंती", here comes the Vyjayanthimala. ये उनके नृत्य के प्रति जुनून का पहला प्रमाण था। फिर तो तमिल में 'वायकई' और हिन्दी में 'बहार' फिल्मों ने उन्हें 'डांसिंग स्टार' के रूप में एक मजबूत शुरुआत दिला दी। इसके बाद आई फिल्म नागिन ने तो सफलता की एक नई इबारत ही लिख दी। फिर एक के बाद एक मेगा हिट्स देवदास, नया दौर, आशा, लीडर, मधुमती, साधना, गंगा-जमुना, संगम, आम्रपाली और ज्वेल थीफ से वैजयंतीमाला दक्षिण भारत से आने वाली वह पहली अभिनेत्री बनी, जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुई। उन्हीं के नक्शेकदम पर चलते हुए साउथ इंडस्ट्री की एक्ट्रेस कलाकारों ने बॉलीवुड में एंट्री लेनी शुरू की।

जिस वक्त वैजयंती माला हिंदी सिनेमा में आईं, उस वक्त नरगिस, नूतन, निम्मी, मधुबाला, मीना कुमारी और वहीदा आदि अभिनेत्रियां सिने पटल पर छाई हुई थी। वैजयंती माला को इनके बीच ही अपनी अलग पहचान बनानी थी, जो आसान नहीं था । पर अपने अभिनय और नृत्य कला के बूते उन्होंने यह साबित कर दिया कि वह भी किसी से कम नहीं हैं। उनके नृत्य का सबसे खास पहलू उनकी परंपरा के प्रति निष्ठा थी। उन्होंने ही सबसे पहले हिंदी फिल्मों में अर्ध-शास्त्रीय नृत्य को पहचान दिलाई थी। हिंदी

फिल्मों में अपने डायलॉग खुद बोलने के लिए उन्होंने हिंदी सीखी। गंगा –जमुना में भोजपुरी और अवधी बोली सुनिए उनकी, कोई नहीं बोल सकता वो साउथ से हैं, इसी परिश्रम और समर्पण से उन्होंने हिंदी सिनेमा में वह मुकाम हासिल किया, जिसे पाने के लिए अभिनेत्रियां आज भी तरसती हैं। उनकी अपनी एक-एक स्टार फॉलोइंग थी, है और हमेशा रहेगी।

उन्होंने हिंदी फिल्मों के हर बड़े स्टार के साथ सिल्वर स्क्रीन शेयर की। जहां वह दिलीप कुमार साहब के साथ सीरियस- इमोशनल रोल सहजता से करती थी, वहीं राज कपूर -देवानंद के साथ रोमांटिक रोल्स में छा जाती थी तो कभी किशोर कुमार के साथ नई दिल्ली और आशा में वह बेहतरीन कॉमेडी करते हुए दिखती हैं। हम उनका 'शास्त्रीय नृत्य' कठपुतली और आम्रपाली में देखते हैं तो आशा में वेस्टर्न डांस स्टेप्स और छोटी सी मुलाकात में उत्तम कुमार जी के साथ 'रॉक एंड रोल' डांस भी बड़ी आसानी से करती हैं।

कई क्लासिक्स और हिट फिल्मों में अभिनय करने के बावजूद, कुछ अद्भुत अवसर थे जिन्हें उन्हें हाथ से जाने देना पड़ा। कम ही लोग जानते हैं कि गुरुदत्त की फिल्म *मिस्टर एंड मिसेज 55* के लिए वैजयंती माला पहली पसंद थी । बिमल रॉय की *बंदिनी* और देवानन्द की गाइड के लिए उनसे संपर्क किया गया, जिसे उन्होंने *संगम* में व्यस्त होने के कारण अस्वीकार कर दिया। राम और श्याम भी उनको अपने अन्य शूटिंग के चलते छोड़ना पड़ा, *दीवार* में निरूपा रॉय द्वारा निभाई गई भूमिका को भी उन्होंने ठुकरा दिया। गुलजार साहब की फिल्म 'आंधी' में भी उन्हें लगभग साइन कर दिया गया था पर कुछ विवादों के चलते उन्होंने उसे छोड़ दिया। मनोज कुमार की क्रांति भी उन्होंने मना कर दी। ये सब फिल्में ब्लॉक बस्टर्स बनीं, पर इसका अफसोस उनको कभी नहीं हुआ।

वैजयंती माला की निज़ी ज़िंदगी की बात करें तो इन्होंने डॉक्टर चमनलाल बाली से शादी की थी। उसके बाद पूरी तरह से फिल्मों से उन्होंने किनारा कर लिया। पर देश-विदेश में भरतनाट्यम डांस बेले के शो वह करती रही। वह एक बहुत अच्छी गायिका भी है। राजनीति में भी पहले कांग्रेस और अब वह भाजपा के साथ जुड़ी है। बाद में वह अध्यात्म की ओर झुक गईं परंतु उनकी डांस प्रैक्टिस आज भी लगातार चल रही है। यह नृत्य ही है जिसने आज भी उनको सदाबहार और जीवंत रखा है। उनकी नजाकत, नफासत, सुंदरता, आंखों की चमक, पांव की थिरकन, सनसनाती हंसी, बेमिसाल नृत्य शैली और अद्भुत अदाकारी फिल्म जगत में एक माइलस्टोन है। वैजयंती माला ने भारतीय सिनेमा जगत में अपना जो योगदान किया है उसके लिए फिल्म जगत हमेशा उनका ऋणी रहेगा। आने वाली पीढ़ी, जो अभिनय में अपना कैरियर बनाना चाहती हैं, उनके लिए वैजयंती माला जी की फिल्में और उनकी जीवन शैली हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

वरिष्ठ अनुवादक,
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

****

लेख

अदम गोंडवी के साहित्य में : राजनैतिक चेतना

- **कुसुम विश्वकर्मा**

"जहाँ दर्द होगा, भूख होगी और पैरों में बेवाई होगी,
अदम, लेखनी वहां मरहम लगाने जरूर आई होगी।"

"खाली पतीला खाली पेट पर, जब भारी पड़ा होगा,
कोई गोंडवी, जन की खातिर फिर सत्ता से अड़ा होगा।"

अदम गोंडवी (रामनाथ सिंह) जी का जन्म अट्टा परसपुर, गोंडा, उत्तर प्रदेश में 22 अक्टूबर, 1947 को हुआ था। गोंडवी जी का जन्म एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था, यह बात दीगर है कि उनके पास कृषि योग्य भूमि ठीक-ठाक मात्रा में थी। अदम जी के पास कागजी डिग्रियां भले ही बहुत कम थी किन्तु आम जन की पीड़ा, संत्रास, छटपटाहत, बेबसी, लाचारी, भय आदि को समझने का गुण शायद दैवीय था। इसी लेखनी के दम अदम जी जनता के सच्चे कवि बन गए।

अदम जी जन कवि थे, उनकी कविताओं के विषय हाशिएं की जाति, दलित, गरीबों की पीड़ा, दर्द उनकी मुफ्लिसी, उनका संत्रास, उनकी बेबसी, उनका दर्द, उनकी आह की चित्कार थी। उन्होंने हिंदी भाषा में कविता अवश्य लिखी किंतु उनकी कविता के भावों को, उसकी संवेदना को समझने के लिए वह किसी भाषा के मोहताज नहीं है। अदम जी उन रचनाकारों में गिने जाते हैं जिनका सीधा सवाल सत्ता के ठेकेदारों तथा समाज के रहनुमाओं से है।

गोंडवी जी की कविता अपनी सामाजिक टिप्पणी के लिए जानी जाती है। जो भ्रष्ट राजनेताओं और प्रकृति में क्रांतिकारी विचारों के प्रति घृणा उत्पन्न करती है। समाज में व्याप्त भयंकर असमानता, मनुष्य की मनुष्य के प्रति घृणा, जाति, रंग, लिंग, भाषा, विपन्नता के आधार पर गरीबों का शोषण आदि आपकी कविता के विषय है।

अदम गोंडवी जी ने हिंदी ग़ज़ल में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आप कबीर परंपरा के लेखक है, कबीर की तरह बेबाक, बेलौस और उतने ही फक्कड़ मिजाज़। न आज का पता न ही कल की खबर। अपनी धुन में घर बार सब फूकने को तैयार।

आपकी लेखनी का अलग अंदाज तथा लीक से हट कर विषयों का चयन आपको समकालीन शायरों के बीच एक अलग पहचान देता हैं। हिंदी साहित्य में गोंडवी जी के महज दो ग़ज़ल संग्रह छपें। एक 'समय से मुठभेड़' नाम से, दूसरा 'धरती की सतह पर' नाम से छपा।

अदम गोंडवी जी को 1998 में मध्य प्रदेश सरकार ने दुष्यंत कुमार पुरस्कार से सम्मानित किया। 2001 में उन्हें अवधी/हिंदी में उनके योगदान के लिए शहीद शोभा संस्थान द्वारा माटी रतन सम्मान से सम्मानित किया गया।

18 दिसंबर, 2011 को गोंडवी की मृत्यु पेट के रोगों के कारण, आयुर्विज्ञान संजय गांधी स्नातकोत्तर संस्थान, लखनऊ में हुई।

एक रचनाकार अपने समय के सवालों से बच नहीं सकता। लेखक अपने समय का साक्षी होता है और अपने समय के सवालों से पूरी ईमानदारी से जूझता है, तत्कालीन समस्याओं से लड़ता है और उन समस्याओं के निकलने का समाधान भी लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

अदम गोंडवी जी की रचना वर्तमान परिदृश्य को व्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है, आज के समय में पूरी तरह से प्रासंगिक है। रचनाकार अपने समय के सवालों से स्वयं भी दो-चार होता है और लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करता है, यही सवाल आने वाले भविष्य की दिशा तय करते हैं। दुष्यंत कुमार के पश्चात अदम गोंडवी ऐसे शायर, रचनाकार हैं जिन्होंने जनता से सीधे संवाद स्थापित किया। वे जनता के बीच रहकर जनता के लिए अपनी रचना धर्मिता निभाते हैं। आम जन के प्रश्नों को, उनकी समस्याओं को, उनके दुःख को सत्ता पर स्थापित लोगों और ठेकेदारों के समक्ष सीधे-सीधे प्रस्तुत करते हैं।

गोंडवी जी का स्वभाव बेबाक था और वह अपनी बातों को भी उतनी ही बेबाकी से रखते थे चाहे वह सत्ता में बैठे राजनेता, ठेकेदार अथवा व्यवस्थापक ही क्यों न हो। वह देश के हुकमरानों से सीधे प्रश्न करते थे फिर चाहे उसकी कीमत जो भी चुकानी पड़े वे अड़िग अपने प्रश्नों पर डटे रहते थे। उनकी लेखनी में आम जनता के दुख, पीड़ा, दर्द, उनकी तकलीफें, उनकी शिकायतें, उनकी उम्मीदें सब उनकी लेखनी में व्याप्त रहती थी। इस कारण आम जनता अपने आपको उनसे जुड़ा हुआ महसूस करती थी। गोंडवी जी आम जन की समस्याओं को उनकी परिस्थितियों को जीते थे इसलिए उनकी लेखनी हमेशा जन के बहुत ही करीब रही है।

राजनीति देश के शासन को सुचारु रूप से चलाने का एक तंत्र है जहां संविधान के नियमों के तहत जन प्रतिनिधि जनता के सेवार्थ चुन कर आते हैं और अपने सहयोग से समाज और देश को उन्नत बनाते हैं, भारतीय परिदृश्य में यह एक कोरी कल्पना मात्र रह गई है। वर्तमान में राजनीति ऐसा दलदल हो गई है जो किसी भी दूषित कर्म से अछूती नहीं रही है। जितना अपराधिकरण राजनीति का हुआ है उतना अन्य किसी क्षेत्र में नहीं हुआ है। भ्रष्टाचार, धन लोलुपता, बल प्रदर्शन, भेदभाव, आर्थिक असमानता, आशिक्षा आदि। जो राजनीति कभी जन सेवा का आधार थी, आज वह आम जन से कोशों दूर है। एक बार सत्ता में चुनकर आया व्यक्ति पहले अपने उद्धार की बात सोचता है जिसके लिए वह चुनाव प्रचार में पानी की तरह पैसा बहाता है। इसी अपराधिकरण का खुलासा गोंडवी जी अपनी निम्न पंक्तियों में करती हैं :

'जितने हरामखोर थे कुर्बो-जवार में,
परधान बन के आ गए अगली कतार में।'

जो गांव जवार में खड़े होने लायक नहीं थे, वो सारे प्रधानी के चुनाव में जन प्रतिनिधि बन कर आ गए। भेड़िये, मेमने की खाल में समाज की मुख्य धारा में आ बैठें। ऐसा व्यक्ति अपनी नई-नई चालों से गरीब तथा निरीह जनता को अपने जाल में पहले फसाता है फिर अपने मन-मुताबिक उसका शिकार करता है।

राजनीति अब केवल अपने कुकर्मों को धोने का एक साधन मात्र रह गया है, जहां कितना भी दूषित चरित्र का व्यक्ति हो एक बार राजनीति की मुख्य धारा में आ गया तो उसके सारे पाप धुल जाते हैं। समाज में उसे सम्मान और ऊंचा ओहदा प्राप्त हो जाता है। इसी बात की पुष्टि गोंडवी जी की निम्न पंक्तियां करती हैं :

'ये अमीरों से हमारी फ़ैसलाकुन जंग थी,
फिर कहां से बीच में मस्जिद औ मंदर आ गए।'

'जिनके चेहरे पर लिखी है, जेल की ऊंची फसील,
रामनामी ओढ़कर संसद के अंदर आ गए।'

जिनके लिए जेल की काल कोठरी सबसे सटीक स्थान था, वो रामनामी ओढ़ कर भगवान के भक्त, समाज के मार्गदर्शक और ज्ञानी बन कर लोगों के समक्ष खड़े हो गए हैं। जनता चाहे तो भी इनका बहिष्कार नहीं कर सकती हैं क्योंकि शासन की डोर अब इन रामनामी ओढ़े अपराधियों के हाथ में आ गई है।

'जो डलहौज़ी न कर पाया वो ये हुक़्क़ाम कर देंगे
कमीशन दो तो हिन्दोस्तान को नीलाम कर देंगे।

ये वन्दे-मातरम का गीत गाते हैं सुबह उठकर
मगर बाज़ार में चीज़ों का दुगुना दाम कर देंगे।

सदन में घूस देकर बच गई कुर्सी तो देखोगे
वो अगली योजना में घूसखोरी आम कर देंगे।'

राजनेताओं तथा हुक्मरानों का विभत्स्य चेहरा गोंडवी जी अपनी लेखनी के माध्यम से बड़ी ही निडरता से प्रस्तुत करते हैं। अंग्रेज तो फिर भी विदेशी थे और वे भारत में संसाधनों का दोहन तथा व्यापार करने आए थे। एक व्यापारी सदा अपने मुनाफे और घाटे का हिसाब रखता है, वही अंग्रेजों ने किया किंतु हमारे देश के नेता तो डल्हौजी को भी पीछे छोड़ गए। अगर उन्हें कमीशन दी जाए तो वे देश का सौदा करने से भी नहीं चुकेंगे।

भले ही इन नेताओं के तन पर खादी है जो कभी सत्य, अहिंसा और त्याग का प्रतीक थी आज अपराधी और भ्रष्ट नेताओं के तन को सजाने का एक साधन मात्र रह गई है। उसकी वह प्रतीकात्मकता कहीं समाप्त हो गई है। लोगों में गांधी के आदर्श धुंधले पड़ गए हैं। गांधी और उनके आदर्श कब के पीछे छूट गए हैं।

देशभक्ति के गीत भले ही इनके मुख से निकलते हो लेकिन देश के प्रति अपनत्व का भाव दूर-दूर कहीं नहीं है। ये देश भक्ति केवल अपने असली चेहरे को छिपाने और जनता को गुमराह करने के लिए है। अपने लाभ के लिए ये अनैतिक बात को भी नैतिक घोषित कर उसे वैधानिक करार कर देंगे।

'आंख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे
अपने शाहे-वक़्त का यूं मर्तबा आला रहे।

तालिबे शोहरत है कैसे भी मिले मिलती रहे
आए दिन अख़बार में प्रतिभूति घोटाला रहे।

एक जनसेवक को दुनिया में अदम क्या चाहिए
चार-छः चमचे रहें, माइक रहे, माला रहे।'

गोंडवी जी की उपर्युक्त पंक्तियां राजनीति का कच्चा-चिट्ठा खोलकर जन-जन को आज की भद्दी राजनीति का असली चेहरा दिखाती है।

कनिष्ठ अनुवादक,
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

****

सेवा ही सर्वोपरि है, बाकी सब है व्यर्थ।
नित-नित कुछ अच्छा करें, तब जीवन का अर्थ।।

नियमावली गीता है, बाइबिल और कुरआन।
कर्मग्रंथ ही ग्रंथ है, परम, पुनीत, महान।।

संरक्षा का साथ नहीं, घायल होगी रेल।
आस कभी टूटे नहीं, दुख से ना हो मेल।।

दुर्घटना होगी नहीं, यदि हम रहें सतर्क।
साधन हम संरक्षा के, मत कर तर्क वितर्क।।

लेख

मै मोटी हूं... ना !

- **विकास कुमार बघेल**

आज से तीस वर्ष पहले डॉक्टर ने सबको खुशखबरी सुनाते हुए कहा कि मुबारक हो ! 'आपके यहां लक्ष्मी आई है', सबके चेहरे पर खुशी छा गयी और पापा जी तो खुशी से झूम उठे ! क्योंकि वह चाहते भी थे कि उनके यहां 'कन्या रत्न' प्राप्ति हो । नवजात कन्या को घर पर लाया गया । उसकी नन्हीं-नन्हीं किलकारियों से घर खुशी से गूंज उठा । पापा जी ने उत्साहित होकर कहा, हम इसका "नामकरण" बड़ी धूमधाम से मनाएंगे ताकि सबको लगे कि 'हमारी छोरी लड़कों से कम थोड़े है' । निश्चित तिथी को बच्ची का नामकरण रखा गया । नामकरण वाले दिन पापाजी ने सभी रिस्तेदारों एवं पड़ोस के सभी लोगों को आमंत्रित किया । सुबह के समय पंडित द्वारा मेरा नामकरण किया गया । मेरी राशि 'ल' निकली, घर के सभी सदस्यों ने 'ल' नाम से बहुत से नाम सुझाए जोकि पाश्चात्यीकरण के थे । परंतु पापा जी ने किसी की भी नहीं सुनी और कहा हमारे घर में दो लड़कों के बाद लड़की ने जन्म लिया है इसलिए इसका नाम "लक्ष्मी" रखेंगे । सभी को पता था कि पापा जी ने एक बार कह दिया तो वह अपनी भी नहीं सुनते अर्थात 'पत्थर की लकीर' है । खैर ! सभी इस नाम से बहुत खुश थे, लेकिन कुछ लोग मुंह भी बना रहे थे कि कितना पुराना नाम रखा है, आज के समय में इतना पुराना नाम कोई रखता है क्या ?

शाम के समय मेरे 'नामकरण के कार्यक्रम' में बहुत से लोग आए और उपहार स्वरुप बहुत सारे खिलौने और कपड़े भी दिए । घर में काफी जश्न का माहौल था, सभी लोग आयोजन में व्यस्त थे । उस दिन तो पूछो ही मत ! मैं पता नहीं कितने हाथों में इधर से उधर झूल रही थी । मम्मी सबको कह रही थी अरे ! अभी बहुत छोटी है, ज्यादा गोदी में मत उठाओ, लेकिन उनकी सुनने वाला ही कौन था ? उस दिन तो मेरे शरीर का हाल ही मत पूछो कितना दर्द हुआ था ? दूसरे दिन सब कुछ सामान्य था, रिश्तेदार जा चुके थे । मम्मी-पापा थके होने के कारण आराम कर रहे थे । हां मेरे दोनो भाई मेरे खिलौने को खोल-खोलकर देख रहे थे और उनके साथ खेल भी रहे थे । मुझे डर लग रहा था कि वह कहीं उन खिलौनों को तोड़ न दे, यदि खिलौने टूट गए तो मैं क्या खेलूंगी ? मैं अजीब सी आशंका से भयभीत थी !

धीरे-धीरे समय बीतता गया, मुझे पता नहीं चला कि मैं कब स्कूल से निकल कर कॉलेज में आ गयी। मैं पापा की इतनी लाड़ली थी कि पापा मुझे अपने से एक पल भी अलग नहीं होने देते थे और मेरा खाने-पीने का इतना ध्यान रखते थे कि उनके लाड़-प्यार ने मुझे मोटा बना दिया । भैय्या लोग मुझे 'मोटी' कहकर चिढ़ाते थे, मुझे उनकी बात का बुरा भी लगता था लेकिन प्यार भी आता था, वह मुझे बहुत प्यार

करते थे क्योंकि मैं उनकी 'लाड़ली बहना' जो थी । समय के साथ मैंने अपना पोस्ट ग्रेज्यूशेन पूरा कर लिया और मैं नौकरी करना चाहती थी । इसी बीच मेरे दोनो भाईयों की भी शादी हो गयी, घर में सुंदर-सी दो भाभियां आ गयी थी जोकि मेरा बहुत ख्याल रखती थी लेकिन कभी-कभी वह मुझसे नाराज भी हो जाया करती थी क्योंकि मैं उनकी कुछ कमियों को मम्मी को बताया करती थी, हांलाकि मम्मी मुझे डांट देती थी कि तुम भी किसी के घर जाओगी और कोई तुम्हारे साथ ऐसा करे तो तुमको कैसा लगेगा ? मम्मी की बात भी सही थी लेकिन मेरे अंदर ननद वाली फिलिंग भी थी कि ननद-भाभी कभी दोस्त नहीं हो सकते और मैं आदतन मजबूर थी ।

एक दिन मम्मी ने पापा से कहा कि कुछ शादी-वादी की चिंता है क्या ? लक्ष्मी अब शादी लायक बड़ी हो गयी है । पापा ने आश्चर्य चकित होकर कहा, क्या ? हमारी बिटिया शादी लायक हो गयी है ! लेकिन मेरे लिए तो अभी बच्ची ही है । मां ने मुंह बनाते हुए कहा, जब वो पचास साल की भी हो जाएगी तभी तुम्हें वह बच्ची ही लगेगी । क्योंकि मां-बाप के लिए बच्चे तो हमेशा बच्चे ही रहते हैं । पापा जी के माथे पर शिकन-सी दिखाई देने लगी । अब वह मेरे लिए चितिंत नजर आ रहे थे, उन्हें इस बात की चिंता सताए जा रही थी कि पता नहीं मुझे कैसा घर मिलेगा ? और उसके सास-ससुर और बाकी के सदस्यों का इसके प्रति कैसा व्यवहार रहेगा ? तमाम आशंकाएं उनके मन को विचलित कर रही थी । भविष्य में क्या होने वाला है? वह उससे अनभिज्ञ थे ! मम्मी ने जब पापा जी के चहेरे को देखा तो वह भी इसी प्रकार की अनेकों आशंकाओं से बिचलित-सी नजर आ रही थी और सोच रही थी कि हमने इसे कितने लाड़-प्यार से पाला है? पता नहीं दूसरे घर में कैसे रहेगी ? इसके ऊपर इसका शरीर जोकि दिन पर दिन कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है । लड़के वाले जब इसे देखने आएंगे तो कहीं इसके शरीर को देख कर मना न कर दें और अच्छा रिश्ता हाथ से न निकल जाए । दोनो जने अनेकों प्रकार की अप्रत्याशित चिंताओं से व्याकुल दिखाई दे रहे थे। आखिर में, मेरे मम्मी-पापा ने मेरे भविष्य को किस्मत के हवाले छोड़ दिया।

पापा जी ने अपने सभी रिश्तेदारों को मेरे लिए एक अच्छे रिश्ते के बारे में बोल दिया कि कोई सरकारी नौकरी या अच्छी-सी कंपनी या बिजनेस मैन हो तो बताना । थोड़े ही समय में काफी रिश्ते आने लगे। पापा लड़के को देखने जाते तो लड़का तो पसंद आ जाता लेकिन जब वह अपने परिवार के साथ मुझे देखने आते तो पहली ही नजर में उनके मन में से एक ही बात निकलती, अरे बाप रे ! इतनी मोटी । वह लोग औपचारिकता पूरी करके, यह कह कर चले जाते कि घर पहुंच कर जबाब देंगे और फिर उनका कभी जबाब नहीं आता । इस प्रकार से समय बीतता जा रहा था दो साल हो गए कहीं से भी रिश्ता तय नहीं हो पा रहा था । अब तो मम्मी का नजरिया मेरी तरफ से बदल गया, वह हर समय ताने मारती रहती थी कि 'इतनी

मोटी हो गई है’ ये नहीं कि जिम ज्वाइन कर लें ताकि वजन कम हो जाए, जितने भी अच्छे रिश्ते थे, सब हाथ से निकल गए, पता नहीं कौन इससे शादी के लिए ‘हां’ करेगा । अब तो मेरे को भी अपने शरीर से चिढ़ होने लगी, मैं बात-बात पर अपनी भाभियों से लड़ने भी लगी थी । जिससे घर एक कलेश का मैदान बन गया । रोज-रोज के झगड़ों से परेशान होकर बड़े भैय्या; भाभी के साथ अलग रहने लगा । छोटे भाई की बाहर सर्विस थी तो उसने भी छोटी भाभी को अपने पास बुला लिया।

अब घर में, मैं और मम्मी-पापा ही रह गए । कुछ महिनों के बाद पापा जी अपनी सर्विस पूरी करके सेवानिवृत हो चुके थे । अब वह मेरी शादी को लेकर काफी चिंतित रहने लगे थे और इस कारण से उनको कई बीमारियों ने जकड़ लिया, जिसकी बजह से उनकी तबीयत भी ठीक नहीं रहने लगी। मेरी उम्र अठ्ठाईस के लगभग हो चुकी थी और कहीं से भी शादी की बात नहीं बन पा रही थी । मेरे पापा जी को किसी ने बताया कि आर्मी में एक ‘हवलदार’ है; जिसकी उम्र चालीस साल है और उसकी पहली बीबी मर चुकी है और उसके कोई बच्चा नहीं है इसलिए वह दुबारा से शादी करना चाहता है । पापा जी ने यह बात मम्मी को बताई तो वह गुस्से से उबल पड़ी और कहा, हां ! अब तो दूजे ही रह गए हैं मेरी बच्ची के लिए, तुम्हें शर्म नहीं आई ! जिसने यह बात तुमसे कही तभी क्यों नहीं मना कर दिया, मम्मी गुस्से से न जाने क्या-क्या बड़बड़ाए जा रही थी । मैं भी उस समय दूसरे कमरे से उनकी सब बातें सुन रही थी लेकिन मैं लाचार और विवश थी । धीरे-धीरे एक साल और बीत गया, इसी बीच मेरे पापा जी ने चारपाई पकड़ ली । इसी दौरान मेरे पिताजी के दोस्त जो कि आर्मी वाला रिश्ता लेकर आए थे वह अक्सर उसका जिक्र छेड़ देते थे कि वह अभी भी तैयार है शादी करने के लिए ।

इसी बीच मेरी सभी सहेलियां भी दो-तीन बच्चों की मां बन चुकी थी। वह अक्सर मेरे को सलाह देती थी कि जैसा भी मिले शादी कर ले, वरना शादी की उम्र निकल गयी तो फिर कोई भी शादी नहीं करेगा और पूरी जिंदगी अकेले गुजारनी पड़ेगी। अब तो रिश्तेदार भी ताने मारने लगे थे, लड़की को घर पर बिठा के रखा है, ये नहीं कि इसकी कहीं शादी कर दो । मैं भी अब लोगों के तानों से परेशान हो चुकी थी, मैंने दिल पर पत्थर रख कर पापा जी से कहा कि आपको जैसा भी लड़का मिले मैं उससे शादी करने के लिए तैयार हूं भले ही आर्मी में हवलदार क्यों न हो ? मेरा साफ संकेत था कि मैं आर्मी वाले से शादी करने को तैयार हूं । पहले तो मेरे इस निर्णय पर भौंचके रह गए फिर कुछ सोचते हुए बोले, सोच लो ? बाद में हमें मत कहना कि आप लोगों ने मेरी जबरदस्ती शादी कराई है । मैं कुछ नहीं बोली सिर्फ खामोश रही । वे मेरी मौन-स्वीकृति समझ चुके थे और उन्होंने मेरी किस्मत को भगवान की नियति समझ कर उसके भरोसे छोड़ दिया । हांलाकि मेरे बड़े भाइयों ने इसका विरोध किया और कहा कि समाज में लोग क्या कहेंगे ?

खैर ! एक महिने के अंदर बड़ी सादगी से मेरी कुछ गिने-चुने रिश्तेदारों की मौजूदगी में आर्मी वाले से शादी हो गई । शादी का एक साल बड़ी हंसी-खुशी से बीत गया फिर अचानक मेरी जिंदगी में ग्रहण लग गया । जब मुझे मालूम हुआ कि इनका पहले से ही एक दूसरी औरत से संबंध है, तो मेरे पैरो तले जमीन खिसक गई ! मैंने यह बात अपने घर वालों को बताई तो वह भी परेशान हो गए । लेकिन क्या कर सकते थे? उन्होंने मेरे पति से बात करनी चाही तो वह कश्मीर में ड्यूटी पर थे । उन्होंने बड़ी बतमीजी और गुस्से से कहा कि मेरा किसी अन्य औरत से कोई संबंध नहीं है बल्कि तुम्हारी बेटी का ही मेरे पड़ोस के एक लड़के से चक्कर है, वह अक्सर हमारे घर आता है और एक दिन मेरी मां ने उसे तुम्हारी बेटी के साथ रंगरेलियां मनाते पकड़ा है । मैं उसे अपने साथ नहीं रख सकता, तुम अपनी बेटी को अपने घर ले जाओ । जब मेरे पिताजी ने यह बात सुनी तो उनको हार्ट अटैक का दौरा पड़ गया । उनको तुरंत पास के अस्पताल ले जाया गया । प्राथमिक उपचार के बाद वह सामान्य हो गए । हांलाकि डॉक्टर ने कुछ सावधानियां बरतने को कहा ।

अब तो मम्मी-पापा की नींद ही उड़ गई, भाइयों को जब यह सब पता चला तो उन्हें यकिन नहीं हुआ क्योंकि उनको पता था कि हमारी बहन का चरित्र एवं व्यवहार कैसा है । जरुर ससुराल वाले ही कोई साजिश रच रहे हैं ? हमारी बहन के खिलाफ । उन्होंने भी बात करनी चाही तो वही रटा-रटाया जवाब मिला कि हमें नहीं रखना है तुम्हारी बहन को, जल्दी से ले जाओ, वरना हम छोड़कर आ जाएंगे । भाईयों ने मम्मी- पापा से बात की तो मम्मी ने कहा कि उसे यहां ले आओ, कहीं ऐसा न हो कि उसके साथ कुछ बुरा कर दें !

जब बड़े भैय्या मुझे लेने पहुंचे तो उनके घर वालों ने उनके साथ बुरा व्यवहार किया और गाली-गलौज करने लगे । भैय्या सब कुछ सहते हुए मेरे को घर ले आए । जब मैं घर पहुंची तो मेरी हालात देखकर सभी चौंक गए ! मैं अपनी मम्मी से लिपट कर रोए जा रही थी और मम्मी भी गुस्से से उनके परिवार को गाली देते हुए पता नहीं क्या-क्या कहे जा रही थी । जब मैंने विस्तार से सब बातें बताई तो सबको पहले से ही यकीन था कि जैसा वह लोग आरोप लगा रहे हैं उसमें बिल्कुल भी सच्चाई नहीं है । सच बात तो यह है कि आर्मी वाले का ही एक औरत से चक्कर था और वह मेरे मोटेपन से खुश नहीं था । मेरी सास और उसकी बेटियां रोजाना मेरे मोटापा को लेकर जली-कटी सुना कर झगड़ा करती रहती थी । मैंने कभी भी यह बात अपने मम्मी-पापा और न ही अपने भाईयों को बताई थी वरना उनको सुनकर दुःख होता, वैसे ही वह लोग मेरे से परेशान हो चुके थे, मैं और उनको परेशान नहीं करना चाहती थी । चुपचाप अपनी बदनसीबी और मोटापे के अभिशाप को झेलती रही ।

कुछ दिनों के बाद मेरे पापा ने मेरे भाइयों से कहा कि इस तरह से बेटी को घर पर नहीं बिठा सकते, मुहल्ले वाले तरह-तरह की बातें बनाएंगे। एक काम करते हैं, बेटी के ससुराल वालों से एक बार आमने-सामने बैठ कर बातें कर लेते हैं; शायद कोई समाधान निकल जाए और बेटी ससुराल में शांति से रहे । भाइयों को यह बात अच्छी लगी उन्होंने मेरे ससुराल वालों से बात की तो; वह पहले तैयार नहीं हुए, जब उनको पुलिस का डर दिखाया तो वह बातचीत के लिए तैयार हो गए । तय हुआ कि लड़की के ससुराल में पांच आदमी तुम्हारे यहां के, और पांच आदमी हमारे यहां के बैठ कर बीच का हल निकालेंगे । निश्चित समय पर मेरे यहां से मेरे दोनो भाई, पापा जी और चाचा जी एवं मौसा जी उनके घर पर पहुंच गए और उनके तरफ से भी पांच लोग शामिल थे ।

बातों का सिलसिला शुरू हुआ, शुरु में पहले एक दूसरे पर दोषारोपण करने लगे। मेरे तरफ के घर वाले लड़के और उनके परिवार की कमियां और गलतियां बताने लगे, दूसरी ओर मेरे ससुराल वाले मेरे में हजारों गलतियां गिनाने लगे और मेरे चरित्र पर लांछन लगाने लगे तो मेरे भाईयों को यह बर्दास्त नहीं हुआ और हाथा-पाई की नौबत आ गई । मेरे ससुराल वालों ने जिस कमरें में हमारे परिवार वाले सभी बैठे हुए थे उन्होंने उसका बाहर से दरवाजा बंद कर दिया और बतमीजी पर उतर आए और हमारे परिवार के साथ लाठियां और डंडों से पिटाई शुरु कर दी, जिसमें मेरे भाईयों और पापा जी को काफी चोटें आई और हमारे लोग बड़ी मुश्किल से वहां से अपनी जान बचाकर सीधे पुलिस थाने पहुंचे और उनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी । उसके बाद अस्पताल जाकर अपना इलाज कराने लगे । जब यह सब बातें हम लोगों को मालूम पड़ी तो घर में अफरा-तफरी मच गई, पूरे मोहल्ले में यह बात आग की तरह फैल गई कि इस प्रकार की घटना हो गई है । पूरे मौहल्ले के लोग हथियारों से लैस हो कर उन पर हमला करने के लिए चलने को तैयार हो गए । किसी तरह से मामले को शांत कराया गया क्योंकि इस प्रकार से मामला और गंभीर एवं पेचीदा हो सकता था । बाद में मालूम पड़ा कि उस तरफ के (ससुराल वाले) लोगों ने भी पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी कि कुछ गुंड़ें हमारे बेटे और बेटियों पर जान लेवा हमला करने को आए थे । मामला संगीन और जटिल होकर 'केस', कोर्ट में चला गया था ।

कोर्ट की तारीखें पड़नी शुरु हो चुकी थी। पहली तारीख में, मैं कोर्ट में हाजिर थी और जबकि मेरा पति, कोर्ट में हाजिर होने के लिए मुख्य प्रवेश दरवाजे पर पहुंचा तो मेरे चाचा के लड़के ने गुस्से में उसके सिर पर पत्थर मार दिया क्योंकि उस घटना में उसके पापा को भी चोंटे आई थी, इसलिए वह बदले की भावना में जल रहा था और वह ऐसे ही किसी मौके की तलाश में था । कोर्ट के प्रांगण में अफरा-तफरी मच गयी । पुलिस ने हमारी तरफ से इस वारदात में शामिल जो भी मिला उसको पकड़ना शुरु कर दिया । सभी

लोग अपने आपको छिपाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। मेरे दोनो भाई जो मेरे साथ थे कोर्ट में खड़े थे, वह आसानी से पुलिस के हत्थे चढ़ गए । कोर्ट ने मामले को गंभीर मानते हुए आगे की कार्रवाई को स्थगित कर दिया और पन्द्रह दिन के बाद सुनवाई की तारीख दे दी ।

इधर पुलिस ने हमारे दोनो भाईयों की थाने में जमकर आवभगत की, दूसरे दिन रविवार होने की बजह से कोर्ट बंद था । सोमवार को ही उनकी जमानत हुई । पन्द्रह दिन के बाद फिर मैं और वह (मेरा पति) जब कोर्ट में हाजिर हुए तो कोर्ट ने मेरे पक्ष में फैसला सुनाते हुए, उन्हें दहेज का पूरा सामान और पैसा वापस करने तथा तलाक स्वीकार करने के लिए मंजूरी दी ।

अब मैं निश्चिंत थी क्योंकि मैं एक बुरे स्वप्न से निकल कर अपने भविष्य की स्वतंत्र मलिका बन चुकी थी। इन सब घटित घटनाओं से मेरे मन-मस्तिक पर बुरा असर हुआ और मैं अवसाद में चली गई, जिसकी बजह से मेरा अपने आप वजन कम होने लगा और मैं पतली दिखने लगी थी।

घर पर खाली बैठने से मेरे मस्तिक पर पुरानी घटित घटनाएं गुजरने लगी कि किस प्रकार से इस घटना में मैंने अपने पापा को खो दिया क्योंकि जिस दिन बंद कमरे वाली घटना हुई थी, उसके दूसरे दिन ही सदमे से उनको मेजर हार्ट-अटैक आया और वह हम सबको विलखता हुआ छोड़ गए, इसके अलावा और भी घटनाएं मेरा पीछा नहीं छोड़ रही थी । सभी ने मुझे सलाह दी कि कहीं पर जॉब कर लूं ताकि उस बुरे अतित से बाहर आ सकूं ।

मैंने कुछ समय बाद एक ऑफिस में नौकरी करनी शुरु कर दी, सब कुछ ठीक चल रहा था, फिर मेरी जिंदगी में एक आदमी आया जो मेरे साथ ही नौकरी करता था और उसकी बीबी ने उसको छोड़ दिया था । उसको भी एक सहारे की जरुरत थी और मुझे भी जिंदगी को आगे ले जाने के लिए सहारे की आवश्यकता थी । वह मेरी तरफ आकर्षित होने लगा और मेरी जरुरतों का ध्यान रखने लगा । मैं भी पता नहीं कैसे उसकी तरफ खिंचती चली गयी और जब उसने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो मैं मना नहीं कर सकी । आज 28 साल हो गए हैं, अपने दो बच्चों के साथ हंसती-खेलती दुनिया में।

मैं पिछले अतीत की सभी बातें भुला चुकी हूं और नई जिंदगी से बहुत खुश हूं ।

वरिष्ठ अनुवादक,
इरीन, नासिक रोड

****

मराठी खंड

कविता

तरी राग यायला नको !

- अभिजीत बाबुराव रोहेकर

दूध आले सकाळी भेसळयुक्त जरी,
तरी राग यायला नको !
वर्तमानपत्रात बातम्या आल्या शिव्या जरी ,
तरी राग यायला नको !
रिक्शावाला जायला म्हणाला नाही जरी,
तरी राग यायला नको !
स्टेशनवरील गर्दीत लोकल चुकली जरी ,
तरी राग यायला नको !
गर्दीच्या वासात माणसं शिंकली जरी,
तरी राग यायला नको !
बसण्याच्या शर्यतीत चौथी सीट हुकली जरी,
तरी राग यायला नको !
ऑफीसला जाणारी बस चुकली जरी,
तरी राग यायला नको !
कामाची फाईल वाढतच चालली जरी,
तरी राग यायला नको !
बॉसला सॉरीची समिधा वाहीली जरी,
तरी राग यायला नको !
डब्यात रोज बटाट्याची भाजीच दिली जरी,
तरी राग यायला नको !
ठंड चहाची सवयच जडली जरी,
तरी राग यायला नको !

घरी जाताना बुटाची सोलच विरली जरी,
तरी राग यायला नको !
वाण्याकडे सामानाची यादी वाढली जरी,
तरी राग यायला नको !
जीवा झाला स्वस्त आणि सिलेंडर झाले महाग जरी,
तरी राग यायला नको !
फेस आला प्रपंचाचा पण बदल नाही खास जरी ,
तरी राग यायला नको ???

एमसीएम/सीयूजी/दूरसंचार/मुख्यालय,
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार
इंजीनियर कार्यालय, मध्य रेल

****

'असामान्य घटना' नियम, अगर सभी को ज्ञान।
गाड़ी के संचलन में, न आए व्यवधान।।

सावधान व सतर्कता, नियमों का हो ज्ञान।
दुर्घटना होगी नहीं, शंटिंग के दौरान।।

दुर्घटना होती तभी, जब हम करते भूल।
जरा सी लापरवाही, जीवन भर का शूल।।

चमक रेल की कम न हो, जन-जन का विश्वास।
खुशहाली छाई रहे, ऐसा करें प्रयास।।

कविता

माथेरानची राणी

- संघपाल वाठोरे

माथेरानला वळसा घालत
मंजुळ गाते गाणी तु.
डोंगर माथ्यावरती चढते
माथेरानची राणी तु.

प्रवाशांना घेऊन चढते
तीव्र चढ़ावर तु हट्टी.
नेरळ वरून पहिले स्टेशन
दाखविते 'जुम्मापट्टी'.

'वॉटर पाईप' गाठताना
वाड्या-पाड्यातून तु जाते
इवल्या-इवल्या चाकांसोबत
खेळण्यातली तु वाटे.

'वन-कीस-टनेल' मधले चुंबन
युगुलांसाठी अजरामर
चिरकाल स्मरणात राहते
माथेरानची ट्रेन सफर

पीरभाय यांना सलाम करित
'अमन लॉज' ला थांबते तु
निसर्ग पहा, आनंद घ्या
प्रत्येकाला सांगते तु.

शंभरीची तु होऊन गेली
तरुणी अजुन भुरळ तुझी
तुझ्यासोबत फिरण्यासाठी
प्रवासीगण होतो राजी

बारा मैलाचे अंतर कापित
नेरळ वरूनि निघते तु
सह्याद्रीचा साज दाखवित
माथेरानला पोचते तु.

शिक्षक, माथेरान हील स्टेशन,
जिला-रायगड, महाराष्ट्र

भुसावल मंडल पर दिनांक 09.12.2024 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई।

भुसावल मंडल पर दिनांक 16.12.2024 से 18.12.2024 तक तीन दिवसीय राजभाषा विषयक हिंदी कार्यशाला आयोजन की गई।

नागपुर मंडल पर महाप्रबंधक महोदय श्री धर्म वीर मीना के करकमलों से नागपुर मंडल की ई-गृहपत्रिका 'आरोही' का विमोचन।

महाप्रबंधक महोदय के बल्लारशाह - सेवाग्राम सेक्शन के वार्षिक निरीक्षण के दौरान नागपुर मंडल द्वारा राजभाषा ई- प्रदर्शनी लगाई गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोलापुर द्वारा उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सोलापुर को प्रथम पुरस्कार के रूप में “राजभाषा शील्ड” एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक, श्री नीरज कुमार दोहरे।

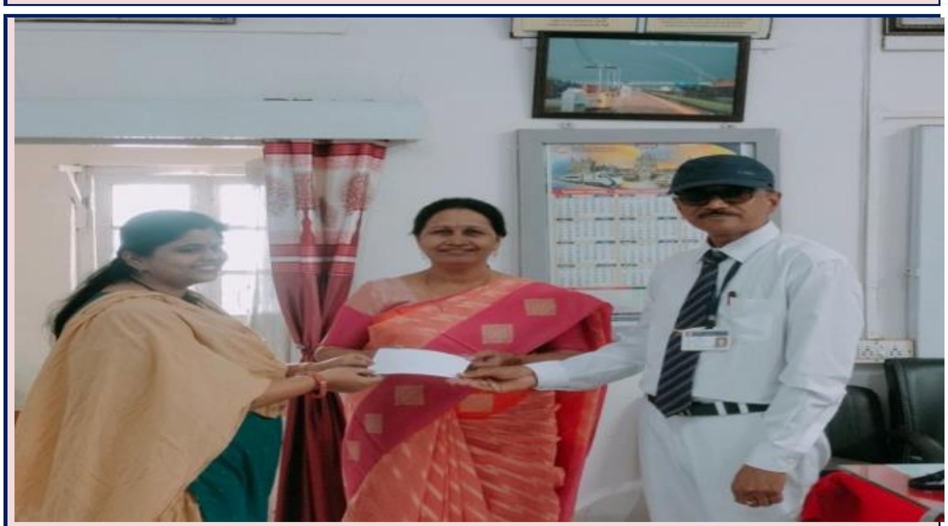

सोलापुर मंडल के स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कुर्डुवाड़ी में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार हेतु उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ. विभावरी गोरे जी की प्रमुख उपस्थिति में राजभाषा प्रश्नमंच और तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। इसमें सफल कर्मचारियों को तत्काल नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

पुणे मंडल द्वारा प्रकाशित पत्रिका इंद्रायणी का महाप्रबंधक, मध्य रेल के कर कमलों से विमोचन किया गया।

माटुंगा कारखाना में स्थित "कवि शैलेंद्र" हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय के प्रचार-प्रसार हेतु माटुंगा कारखाने पर हिंदी पुस्तक वाचन कार्यक्रम का आयोजन

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुसावल पर मुख्य कारखाना प्रबंधक, श्री सतीश सिंह चौहान जी की अध्यक्षता में दिनांक 14.02.2025 को राजभाषा विषयक बैठक संपन्न हुई।

जैनेन्द्र कुमार

(जन्म: 2 जनवरी, 1905 - मृत्यु: 24 दिसम्बर, 1988)

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार थे। जैनेन्द्र, प्रेमचन्द युग और प्रेमचन्द साहित्य के पूरक हैं। प्रेमचन्द के साहित्य की सामाजिकता में व्यक्ति के जिस निजत्व की कमी कभी- कभी खलती थी वह जैनेन्द्र ने पूरी की।

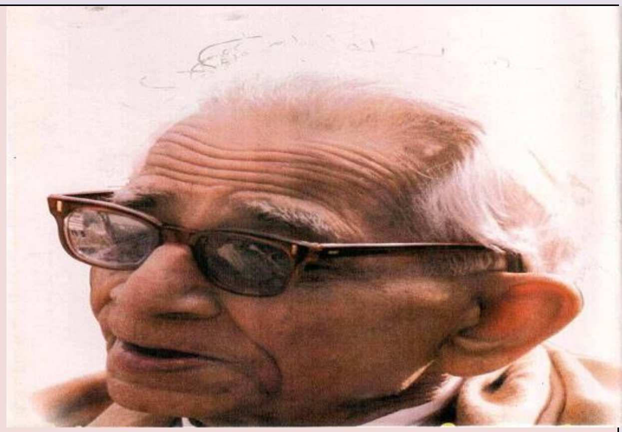

प्रारम्भ के उपन्यासों 'परख' (1929), 'सुनीता'(1935) और 'त्यागपत्र' (1937) ने वयस्क पाठकों को सोचने के लिए बहुत सी नई सामग्री दी।

जैनेन्द्र के पात्र बने-बनाये सामाजिक नियमों को स्वीकार कर, उनमें अपना जीवन बिताने की चेष्टा नहीं करते अपितु उन नियमों को चुनौती देते हैं। यह चुनौती प्राय: उनकी नायिकाओं की ओर से आती है जो उनकी लगभग सभी रचनाओं में मुख्य पात्र भी हैं। सन् 1930-35 या 40 में स्त्रियों का समाज की चिन्ता किये बिना, विवाह संस्था के प्रति प्रश्न उठाना स्वयं में नयी बात थी।

प्रमुख कृतियां

उपन्यास	कहानी संग्रह	निबंध संग्रह	अनूदित ग्रंथ
➢ 'परख' (1929) ➢ 'सुनीता' (1935) ➢ 'त्यागपत्र' (1937) ➢ 'कल्याणी' (1939) ➢ 'विवर्त' (1953) ➢ 'सुखदा' (1953) ➢ 'व्यतीत' (1953) ➢ 'जयवर्धन'(1956)	➢ 'फाँसी' (1929) ➢ 'वातायन' (1930) ➢ 'नीलम देश की राजकन्या' (1933) ➢ 'एक रात' (1934) ➢ 'दो चिड़ियाँ' (1935) ➢ 'पाजेब' (1942) ➢ 'जयसंधि' (1949) ➢ 'जैनेन्द्र की कहानियां' (सात भाग)	➢ 'प्रस्तुत प्रश्न' (1936) ➢ 'जड़ की बात' (1945) ➢ 'पूर्वोदय' (1951) ➢ 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' (1953) ➢ 'मंथन' (1953) ➢ 'सोच विचार' (1953) ➢ 'काम, प्रेम और परिवार' (1953) 'ये और वे' (1954)	➢ 'मंदालिनी' (नाटक–1935) ➢ 'प्रेम में भगवान्' (कहानी संग्रह–1937) ➢ 'पाप और प्रकाश' (नाटक–1953)। **सह लेखन** ➢ 'तपोभूमि' (उपन्यास, ऋषभचरण जैन के साथ–1932)। **संपादित ग्रंथ** ➢ 'साहित्य चयन' (निबंध संग्रह–1951) ➢ 'विचारवल्लरी' (निबंध संग्रह–1952)

कमलेश्वर

जन्म 06 जनवरी 1932
निधन 27 जनवरी 2007

जन्म स्थल मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत

कहानी संग्रह

- जॉर्ज पंचम की नाक
- मांस का दरिया
- इतने अच्छे दिन
- कोहरा
- कथा-प्रस्थान
- मेरी प्रिय कहानियाँ

आत्मपरक संस्मरण

- जो मैंने जिया
- यादों के चिराग़
- जलती हुई नदी

उपन्यास

- एक सड़क सत्तावन गलियाँ
- लौटे हुए मुसाफिर
- डाक बंगला
- समुद्र में खोया हुआ आदमी
- तीसरा आदमी
- काली आंधी
- वही बात
- आगामी अतीत
- सुबह....दोपहर....शाम
- रेगिस्तान
- कितने पाकिस्तान

कमलेश्वर को उनकी रचनाधर्मिता के फलस्वरूप पर्याप्त सम्मान एवं पुरस्कार मिले। 2005 में उन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से राष्ट्रपति महोदय ने विभूषित किया। उनकी पुस्तक 'कितने पाकिस्तान' पर साहित्य अकादमी ने उन्हें पुरस्कृत किया।